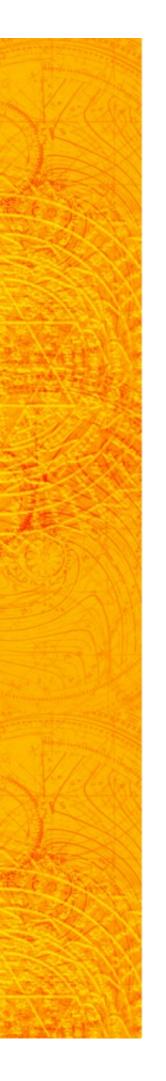


SERVED OVER 107 MILLION SMILES
SINCE 1984

# IN-DEPTH HOROSCOPE

П

PREMIUM REPORT





## Horoscope of Mamta Rawat

जननी जन्म सौख्यानाँ वर्धनी कुल सँपदाँ पदवी पूर्व पुण्यानाँ लिख्यते जन्म पत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए परिवार की संतोष वृद्धि के लिए प्राचीन धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन हेतु इस कुंडली का निर्माण किया गया



## ClickAstro In-Depth Horoscope



नाम लिंग जन्म तिथि जन्म समय (Hr.Min.Sec) समय क्षेत्र (Hrs.Mins) जन्म स्थान

रेखांश &अक्षांश (Deg.Mins)

अयनांश

जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद जन्म राशी - राशी स्वामी लग्न - लग्न स्वामी

तिथि

सूर्योदय सूर्योस्त

दिनमान (Hrs. Mins)

दिनमान (Nazhika.Vinazhika)

स्थानीय समय

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि

कलिदिन दशा पद्धति

नक्षत्र स्वामी गण, योनी, पश् पक्षी, वृक्ष चन्द्र अवस्था

चन्द्र वेला चन्द्र क्रिया दग्द्ध राशी करण

नित्य योग

सूर्य की राशी - नक्षत्र का स्थान

अंगादित्य का स्थिति

Zodiac sign (Western System)

योग बिंदु - योगी नक्षत्र

योगी ग्रह दुय्यम योगी

अवयोगी नक्षत्र - ग्रह

आत्मकारक (आत्मा) - कारकांश अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)

अरुद्ध लग्न (पद लग्न)

धन अरुद्ध

: Mamta Rawat

: स्त्री

: 22 मई, 1990 मंगलवार

: 08:45:00 PM Standard Time

: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व

: Mohali

: 76.02 पूर्व, 30.26 उत्तर दिशा

चैत्रपक्ष = 23 अंश. 43 मिनिट (कला). 34

सेकेन्ड (विकला).

अश्विनी - 4

: मेष - मंगल

: वृश्चिक - मंगल

: त्रयोदशी, कृष्णपक्ष

: 05:28 AM Standard Time

: 07:17 PM

: 13.49

: 34.32

: Standard Time - 26 Min.

: मंगलवार

: 1859568

: विंषोत्तरी, साल = 365.25 दिन

: केत्

: देव, पुरुष, अश्व

: पुल्लू पक्षीआर्यमाऊ, कुचला

: 10 / 12

: 30 / 36

: 50 / 60

: वृषभ,सिंह

: वणिज

: सौभाग्य

: वृषभ - कृत्तिका

: पैर

: Gemini



: 141:53:25 - पूर्वा

: श्क्र

: सूर्य

: विशाखा - गुरु

: मंगल - मिथ्न

: शुक्र

: वृषभ

: धनु

## ग्रहों का सायन रेखांश

ग्रहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के अनुसार दिया गया है। जिसमें युरेनस, नेपच्युन और प्लूटो को भी शामील किया गया है। पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप की राशी - मिथुन

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला
लग्न	261:1:32	गुरु	100:55:19
चंद्र	34:44:28	शनी	295:5:20 वक्री
बुध	39:4:58	नेप्टयून	284:14:12 वक्री
शुक्र	20:59:45	प्लूटो	225:58:20 वक्री
मंगल	353:37:18	अयन	310:57:40

ग्रहों के निरयन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। सभी गणनाएं, कोष्टक, विवेचन विश्लेषण समय संस्कार आदि भारतीय फलित ज्योतिष के 'सायन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

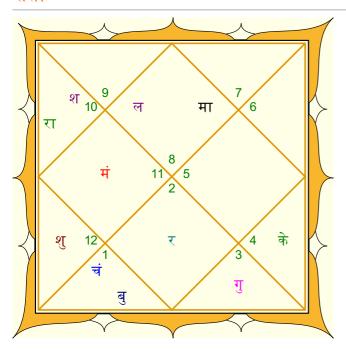
## ग्रहों का निरायन रेखांश

भारतीय फलित ज्यातिष में सभी गणनाएँ और संस्कार सायन पद्धति के अनुसार किये जाते हैं। सायन रेखांश से निरायण रेखांश को घटा कर निरायण मूल्य ज्ञात किया जाता है।

अयनांश की गणना अलग अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये हैं: चैत्रपक्ष = 23अंश.43 मिनिट (कला).34 सेकेन्ड (विकला).

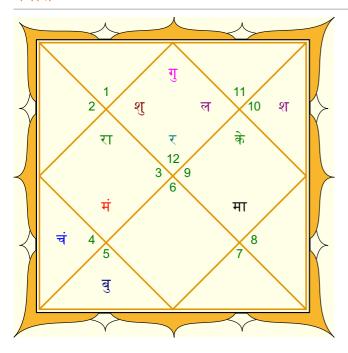
(	( , , , , , , ,				
ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
लग्न	237:17:58	वृश्चिक	27:17:58	ज्येष्ठा	4
चंद्र	11:0:54	मेष	11:0:54	अश्विनी	4
सूर्य	37:32:31	वृषभ	7:32:31	कृत्तिका	4
बुध	15:21:24	मेष	15:21:24	भरनी	1
शुक्र	357:16:12	मीन	27:16:12	रेवती	4
मंगल	329:53:44	कुंभ	29:53:44	पूर्वाभाद्रपदा	3
गुरु	77:11:45	मिथुन	17:11:45	आर्द्रा	4
शनी	271:21:46	मकर	1:21:46 वक्री	उत्तराषाढा	2
राहु	287:14:7	मकर	17:14:7	श्रवण	3
केतु	107:14:7	कर्क	17:14:7	आश्लेषा	1
गुलिक	227:1:33	वृश्चिक	17:1:33	ज्येष्ठा	1

# राशी

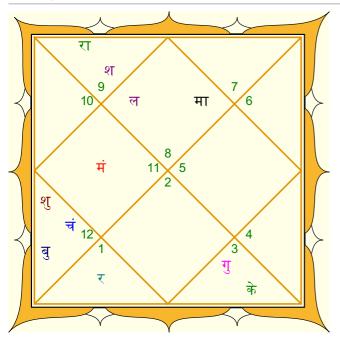


जन्म के समय दशा का भोग्य काल = केतु 1 साल, 2 मास, 18 दिन

## नवांश



# भाव कुंडली



# भाव कोष्टक

भाव	<b>आरंभ</b> प्रारंभ अंश:मिनिट (कला):सेकेन्ड (विकला)	मध्य मध्य अंश:मिनिट (कला):सेकेन्ड (विकला)	अन्त्य अंत अंश:मिनिट (कला):सेकेन्ड (विकला)	<b>ग्रह</b> भाव स्थिती
1	224:39:41	237:17:58	254:39:41	मा
2	254:39:41	272:1:23	289:23:6	श,रा
3	289:23:6	306:44:49	324:6:31	
4	324:6:31	341:28:14	354:6:31	मं
5	354:6:31	6:44:49	19:23:6	चं,बु,शु
6	19:23:6	32:1:23	44:39:41	र
7	44:39:41	57:17:58	74:39:41	
8	74:39:41	92:1:23	109:23:6	गु,के
9	109:23:6	126:44:49	144:6:31	
10	144:6:31	161:28:14	174:6:31	
11	174:6:31	186:44:49	199:23:6	
12	199:23:6	212:1:23	224:39:41	

## पंचाग फलादेश

## सप्ताह के दिन में। : मंगलवार

मंगलवार में जन्म लेना यह सूचित करता है कि आप बिना किसी संकोच के अपना क्रोध प्रकट करेंगे। आप अपने वचन और निर्णय बदलने के लिए नहीं हिचकिचाएंगे। अपने लक्ष्य के मार्ग में चलकर फल प्राप्त करने की शक्ति आप में है।

#### जन्म नक्षत्र : अश्विनी

आपका जन्मनक्षत्र अश्विनी है। आपको अन्य लोगों से सहयोग, मदद और प्रेम सुलभता से प्राप्त होगा। यह होते हुए भी स्वपराक्रम और परिश्रम के माध्यम से स्वावलंबी जीवन बिताना आपका लक्ष्य होगा। परिवार के अन्य लोगों से अनेक तरह के छोटे-मोटे क्लेशों का सामना करना होगा। स्वियोचित ईश्वरभक्ति, विवेक और स्मरणशक्ति आप में प्रकट होगी। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। आप शांत स्वभाव की महिला हैं। मनोनियंत्रण आप के लिए सरल होगा और आप एक गृहनायिका के रूप में बड़ी सावधानी के साथ खर्च करने वाली महिला हैं। यह होते हुए भी हिसाब रखने में कच्ची हैं। योजनानुसार बचत करना आप के लिए किंटन होगा। पैत्रिक घर में और पित के घर में, दोनों स्थान से आदर और सम्मान प्राप्त होगा। जीवन में सामने आने वाली समस्याओं का पूर्ण दृष्टि से अवलोकन करना आप की आदत है। उसके बाद ही निर्णय लेना पसंद करती हैं। लिये गये निर्णयों को बड़ी दृढ़ता से पालन करनेवाली महिला हैं। हर वस्तु साफ-सुथरी होनी चाहिए। ऐसी अपेक्षा रखनेवाली हैं। बचपन से ही ज़िम्मेदारी भरा हुआ जीवन प्राप्त होगा। आपकी कार्यदक्षता के कारण समाज में आप प्रशंसा की पात्र बनेंगी। पित के साथ साधारण सी बात पर छोटी-मोटी नोक-झोंक की संभावनायें हैं। लेकिन यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। साधारणतया जीवन ऐश्वर्य से भरा रहेगा। आप एक भाग्यशाली माँ का स्थान प्राप्त कर सकेंगी। यथायोग्य मनोबल प्राप्त होगा। बातचीत में सौम्य स्वभाव की महिला हैं। इस कारण बाल्यावस्था से ही अन्य लोगों के आकर्षण का आप केन्द्र बनेंगी। आप का भाग्य और मानव स्नेह तुलनात्मक स्थिति में रहेगा। आप परिवार के बीच व्यवहार कुशल होंगी। सहानुभूति और सहनशीलता में कुछ कमी हो सकती है। अकारण छोटी-छोटी बातों से चिन्तित होना आप की आदत है। मूत्राशय, गर्भाशय और हृदय रोग से बचने की सतर्कता रखना लाभदायी और योग्य होगा। गंडमूल संज्ञक ६ नक्षत्रों में अश्विनी की भी गणना होती है।

## तिथि : त्रयोदशी

आप ने त्रयोदशी तिथि में जन्म लिया है। सामान्यत: सभी कार्यों में निर्बल रहने की संभावना है। अन्य की अपेक्षा में आप धन का ज़्यादा व्यय करने वाले हैं। इस कारण लोग आप को खर्चालु कहेंगे। सत्यशीलता आप में रहा हुआ नैसर्गिक गुण है। आप नमकहलाल व्यक्ति हैं। आप अन्य दु:खियों को सदा मदद करने की भावना रखते हैं। आप चतुर और शूरवीर हैं।

## करण : वणिज

क्योंकि आपने वनिज करण में जन्म लिया है आप कला का मुल्यांकन करेंगे। आप अपनी चतुराई का इस्तेमाल करेंगे। अपने स्वास्थ्य से सचेत हैं और जल्दी ही बिना किसी कारण परेशान हो जाते हैं। आप कल्पनाशील और भावुक हैं।

## नित्य योग: सौभाग्य

आपका जन्म सौभाग्य नित्ययोग में हुआ है। जिसके उत्तम लक्षण आपके हाथ और पैर में अंकित हैं। इस योग से आप अनेक दृष्टिकोण से अनुगृहीत हैं। भोजन की चीज़ तैयार करने और वितरण करने में समरूप प्रयुक्त करने का सामर्थ्य आप में खिला हुआ है। सहकारी प्रवृत्तियों से आप को धन मिलता रहेगा। धन उपार्जन के अनेक मार्ग प्राप्त होंगे। आप अपने निवास स्थान से दूर जाकर रहेंगे। 'ज्ञानी धनी सत्यपरायण: स्यादाचारीलो बलवान विवेकी...'

#### भाव फल

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव की यह विज्ञापन समीक्षा करता है। इस विज्ञापन में उल्लेखित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करते हैं ।

## व्यक्तित्व, शारीरीक बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता हैं। यह लग्न कहलाता है।

आपका जन्मलग्न वृश्चिक है। बार बार ज्वर इत्यादि रोग हो सकते हैं। स्वभाव से क्रोधी हैं। उच्च अफसरों से या परिवार में बड़ों से सम्मान और ख़िताब प्राप्त होंगे। शास्त्रों में अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में पूरी कमर कसने वाले हैं। हर कार्य में अपनापन उमड़ आयेगा। धार्मिक क्रियाकाण्ड में अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हैं। मकर तीसरे स्थान में रहने से आप में समाधान और पाण्डित्य की प्रबलता रहेगी। पुत्र पौत्रादियों से संतोष प्राप्त होगा। प्रतिपक्ष के लोगों से सम्मान प्राप्त होगा। आप शाकाहारी बनना पसंद करते हैं। जीवनसाथी के गुणगान गाने के आदि हैं। आपका जीवन संतुष्ट और शाँतिपूर्ण बीतेगा। आप मधुरभाषी स्वभाव के हैं। २४वें, २५वें वर्ष में भाग्योन्नति होने का अवसर प्राप्त हो सकता है। आप मुशील हैं और स्पष्ट विचारवाले हैं। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहना आवश्यक होगा। सदाचारी संतान की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी सौन्दर्य से, शाँत स्वभाव से और विनय से आभूषित होगा। परस्पर समर्पणभाव के कारण जीवन में आपस में सहयोग और सहारा प्राप्त होगा। हर कार्य में मन एकाग्र करना आपके लिए सरल होगा। आठवें स्थान पर मिथुनराशि की उपस्थिति के कारण मादक पदार्थों से (शराब इत्यादि) दूर रहना अनिवार्य है। मधुमेह, पाईल्स और कोई भी गुप्तरोग के चिन्ह दिखाई देते ही ज़्यादा विलंब किए बिना डाक्टरी सलाह प्राप्त करना लाभदायी होगा। पूजापाठ और अन्य धार्मिक कार्यों में रुच होगी। वस्तुत: वृश्चिक के जातक-पराक्रमी, शूर, चतुर, स्वार्थी, वाद-विवादी, हठी, झगडालू, दम्भी, ज्ञानी और धनवान होते हैं। ये सब गुण-अवगुण न्यूनाधिक मात्रा में आप में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

जीवन में सुंदर वस्तुएं प्राप्त होगी। आप हर बात और वस्तु का सूक्ष्मता से अवलोकन करने के आदि हैं। ठीक प्रकार सोचे समझे बिना कदम उठाने के खिलाफ हैं। लेन-देन के कार्य में सूक्ष्म ध्यान देनेवाले हैं। अन्य पर भरोसा करना आप के लिए कठिन होगा। इस कारण कभी कभी सफलता को हाथ से खोना भी पड़ेगा। अपने विचार दूसरों के समक्ष अभिव्यक्त करना पसंद नहीं करते। यह स्वभाव मानसिक परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अपने मित्रों के साथ मन खुला करने से मन का बोझ कम होता है। प्रेम और अनुरागपूर्ण प्रयास से अनेक निकट के मित्र प्राप्त हो सकते हैं। दूसरों के छल कपट का शिकार बनने की संभावना है। इसलिए सतर्क रहना लाभदायी होगा। किसी चीज़ की चोरी न हो उसका ध्यान रखें। इसलिए महँगी चीज़ों का बीमा निकालना बुद्धिमानी माना जायेगा। जीवन का २२,२५,३३,३६,४१,४४,४९ और ५२वाँ वर्ष महत्वपूर्ण होगा।

लग्नाधिपित चौथे स्थान पर हैं। आप जीवन में सफलता के शिखर स्पर्श करने की अभिलाषा रखते हैं। इस कार्य के लिए प्रसन्नचित्त से प्रयत्न करने वाले व्यक्ति हैं। िकया गया हर प्रयत्न और उठाया गया हर परिश्रम ज़रूर सफल होगा। आप श्रेष्ठ उन्नत स्थान प्राप्त करेंगे। ऐश्वर्य आपका साथ देगा। आपके माता पिता संपूर्ण सुख और आनंद का आस्वादन कर पायेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य भी बना रहेगा। अविभावकों का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपको उत्तम आयु प्राप्त होगी।

क्योंकि सूर्य लग्न से प्रभावित है आप सरकारी उद्योग या अन्य आदरणीय पदों पर बैठ सकते हैं। आप अपने पिता से बिना किसी संकोच के धन और संपत्ति पा सकते हैं।

## धन, भूमि और संम्पति

भूमि, संपत्ति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे हैं जो दूसरे भाव द्वारा सूचित की जाती है। इसे धन स्थान कहते है।

दूसरा भावाधिपति आठवें स्थान पर होने से स्थायी संपत्ति पर्याप्त प्राप्त होगी। विवाह कार्यों में किठनाईयों का सामना करना होगा। भ्रातृसुख की कमी रहना संभव होगी। अथवा भाइयों से कम पटेगी। पत्नी का स्वास्थ्य चिन्ता का कारण हो सकता है। अथवा कुछ समय के लिए अलगाव या प्रबल मतभेद हो सकता है।

## भाई / बहन

जन्मकुण्डली का तीसरा स्थान, आपके भाई - बहन, धैर्य और बुद्धि को सूचित करता हैं।

तीसरा भावाधिपति तीसरे स्थान पर रहने से परिवार के अंगों के माध्यम से सुखानुभूति होगी। आप का प्रसन्नतापूर्ण व्यक्तित्व जीवन में ऐश्वर्य प्रदान करेगा। आपका पराक्रम सराहा जायेगा। व्यावहारिक कार्य में पूर्ण पारंगता प्राप्त होगी। हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना आपका प्रमुख गुण होगा। आपकी संतान भाग्यशाली होगी। धन से सदा परिपूर्ण रहने का योग परिलक्षित हो रहा है। सब प्रकार के सुख सदा उपलब्ध होंगे। शनि तीसरे स्थान पर रहा है। इस कारण अपने जीवनसाथी से ज़्यादा प्रेम की अपेक्षा निराश होने का कारण बनेगी। आपके आहार-विहार तथा व्यवहार के प्रति अनेक आक्षेप होंगे। कीर्ति और संपत्ति प्रदान होगी। आप दीर्घायु जीवन बितायेंगे।

तीसरे स्थान पर राहु के होने से स्पष्ट श्रेष्ठ चिंतन कार्य और सशक्त मन के मालिक हैं। अन्य को समझने में और सन्मानित करने की कला में निपुण हैं। यह सब होते हुए भी भाई और बहनों के साथ क्लेश युक्त संबन्ध रहने की संभावना है। आपकी आयु दीर्घ रहेगी।

## संपत्ति, विद्या इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबंधित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचक है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी तीसरे स्थान में रहने से आप एक धैर्यशील नारी होंगी। आप विशाल हृदय की और परोपकारी वृत्ति रखनेवाली युवती हैं। यह आपके जन्मसिद्ध लक्षण हैं। इन सभी बातों की ओर दृष्टि रखते हुए इस नतीजे पर आ सकते हैं कि आप एक भाग्यशालिनी नारी हैं। आपका मन दूसरों के दु:ख से द्रवित होने वाला मन होगा। अपने लाभ का ध्यान न रखते हुए असहायों को सहायता देने में तत्पर रहेंगी।

चौथे भाव का स्वामी शनि है। स्त्री होते हुए भी नेता पद और राजकीय कार्य में निपुणता का योग है। परिवार का कारोबार और घर आदि निपुणता से चलाने में सक्षम हैं। विद्यालय और खेलकूद के मैदान में मार्गदर्शन एवं नेतृत्व सुंदरता से कर सकती हैं। यह कला आप में बालावस्था से ही खिली हुई है। सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में भी आपका योगदान महत्वपूर्ण होगा।

कुज (मंगल) आपके चौथे भाव में स्थित होने से आप राजनीती के क्षेत्र में उन्नति कर सकते हैं। मातृसुख, और स्वजन तथा मित्रसुख का अभाव रहेगा| पारिवारिक बातों पर माता से अनबन की संभावना है। रक्त विकार और छाती के रोगों से सदा सावधान रहें। समय-समय पर डॉक्टरी जाँच करवाते रहने की सलाह दी जाती है।

चौथे स्थान पर बृहस्पति के अनुकूल स्थिति में रहने से अन्य बुरे फलों के होने की संभावना न्यून हो गई है। भू, भवन, वाहन, संपत्ति और माता विषयक सुखों में वृद्धि होगी।

## बच्चे, बुद्धि, प्रतिभा

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव संतान, शिक्षा, मन और बुद्धि को सूचित करता है।

शुक्र पाँचवें स्थान पर रहा है। घड़ी भर उल्लासित तो घड़ी भर असंतोषित अनुभव की संभावनायें रखते हैं। आप चंचल हृदय के माने जायेंगे। सट्टेबाज़ारी और जुए में आपकी कार्यशक्ति सफलता ला सकती है। जीवनकाल में उन्नति प्राप्त होगी।

पाँचवां भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से बच्चों के कारण अथवा स्वास्थ्य के कारण समस्या खड़ी होगी। वायु विकार अथवा श्वासरोग से सदा बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। संतान सुख प्राप्त होगा। मानसिक उद्वेग की संभावना है। इस कारण कुछ अंश तक आप का स्वभाव क्रोधी होगा।

लग्न से पाँचवे भाव में शुभ ग्रहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ ग्रह जो इस भाव को देख रहे हों, अर्थात इन ग्रहों की इस स्थान पर दृष्टि हो तो यह संतति सुख, विद्या आदि विषयों से संबंधित अच्छे फल मिलते हैं।

## रोग, शत्रु , कठिनाइयाँ

छठा भाव रोग, शत्रु और बाधाओं और कठिनाइयों का द्योतक है।

चन्द्र छठ्ठे स्थान पर रहा है। सामान्य आयु के मालिक हैं। उदर रोग बार-बार सतायेगा। आप जीवन में समझौता नहीं कर पायेंगे। आप सहनशीलता में कच्चे रहे हैं। सर्दी जुकाम संबन्धी बीमारी से बचकर रहना लाभप्रद होगा।

बुध छठ्ठे स्थान पर रहा है। क्रोधित और प्रकोपित स्थिति के बाद साधारण स्थिति में आ जाते हैं। आप प्रमादी स्वभाव के हैं। तर्क शास्त्र में निपुण हैं। क्रोधी स्वभाव के कारण अनेक लोगों से शत्रुता होने की संभावना रखते हैं।

छठ्ठा भावाधिपति के तीसरे स्थान पर रहने से आप गरम मिज़ाज के व्यक्ति बनेंगे। इस कारण स्वजनों से शत्रुता उत्पन्न होगी। सहयोगियों से मिलनेवाले सहयोग में कमी अनुभव होगी। मनोबल टूटने न पाये, इसका ध्यान रहें। अधीनस्थ कर्मचारियों या अपनों से छोटों के साथ व्यवहार करते समय, अपने पद की गरिमा को न भूलें।

नौवम स्थान का स्वामी छठे भाव में उपस्थित हैं। आपको चोरो से भय रहेगा।

## वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुण दोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति पाँचवें स्थान पर है। किशोरावस्था से ही विवाह संबन्धी पूछताछ होती रहेगी। सम्पन्न और श्रेष्ठ परिवार के

पुरुष से आप का विवाह होगा। अध्ययन काल में ही विवाह होने की संभावनायें जान पड़ती हैं। पित यशस्वी व संपन्न होगा। आप के पित ज्ञानी और विवेकी होंगे। पित से प्रेम और स्नेह की धारा आप की ओर बहती रहेगी। आपके पित विशाल हृदय के होंगे और उसके कारण आप को संपूर्ण व्यक्ति स्वातंत्र्य प्राप्त होगा। आप का जीवन पित के सहवास में सुरक्षित रहेगा। मिली हुई स्वतंत्रता का दुरुपयोग न हो, इसके प्रति ज़्यादा ध्यान दें। अकारण ही रूठ जाने की आदि हैं। यह सहज नारीसुलभ स्वभाव है। फिर भी आपके कारण घर में कलुषित वातावरण का सर्जन न हो जाये इसका ध्यान रखें।

उत्तर दिशा से श्रेष्ठ जीवनसाथी प्राप्त होने की संभावना है।

सूर्य सातवीं राशि में स्थित है। आप अपनी मीठी बोली, रूप सौन्दर्य और स्वभाव से पुरुषों को आकर्षित करेंगी। पर निकट संबन्धियों से आपका विरोध हो सकता है। इस कारण थोड़ा ध्यान देने से जीवन सुखमय हो सकता है। आपके माँ-बाप आपके लायक पित को चुनने में किठनाई और विलंब का अनुभव करेंगे। इस कारण वे चिंतित भी रहेंगे। अस्थिभंग और नेत्र विकार के लक्षण प्रकट होते ही चिकित्सा की व्यवस्था करें।

शुक्र दशा पराकाष्ठा पर पहुँची है। अन्य दोषों के प्रभाव को क्षीण करने में यह मदद रूप बन पायेगी। अन्य श्रेष्ठ फल की भी प्राप्ति होगी।

सातवाँ भावाधिपति स्वयं के उच्च स्थान पर रहा है। इस कारण वैवाहिक बंधन से लाभ होगा। विवाह के बाद सम्मान में वृद्धि का योग बनेगा।

## दीर्घायु , कठिनाईयां

आठवें भाव से दीर्घायु, वैद्यक चिकित्सा, मृत्यु, और अन्य कठिनाइयों का अध्ययन किया जाता है।

आठवाँ भावाधिपति छठ्ठे स्थान पर रहने से व्यवहार क्षेत्र में और शत्रुओं पर आपकी विजय सुनिश्चित है। बालावस्था में स्वास्थ्य निर्बल रहेगा। ज़हरीले आहार या पानी से हानि की संभावना है। इस कारण स्वयं के खान-पान में ज़्यादा ध्यान देना अनिवार्य है। स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आप का आयु औसत आयु से अधिक है।

गुरु आठवें स्थान पर है। अटूट संपत्ति के मालिक बनेंगे। आपकी आयु दीर्घ होगी। अनेक परिवारों से संपर्क जारी रहेगा। बच्चों के स्वास्थ्य के कारण मन चिंतित रहेगा।

## भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नववाँ भावाधिपति छठ्ठे स्थान पर है। यह स्थिति होने के कारण अधिक लाभ की कोई आशा रखना निराशा का कारण बन सकती है। मित्र और अन्य परिजनों से मिलने वाली सहायता से वंचित रहना पड़ेगा। इस कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न हो सकती हैं। किसी बड़ेरोग से बच गए तो अपने आपको भाग्यशाली महिला समझें।

आपके नौवे भाव में केतु स्थित है। इसलिए आप आडंबर-प्रिय होंगे। आपके स्वभाव में अधिकार और अहंकार का भाव रहेगा। दूसरों से शत्रु भाव भी रहेगा। यह होते हुए भी बडों के प्रति आदर भाव बना रहेगा। कार्यों को सुलझाने की शक्ति में बढावा होगा। पर आपको एक चतुर जीवनसाथी की आवश्यकता होगी। अन्य लोगों से जीवन में सुख और समृद्धि प्राप्त होगी। 'शिखी धर्मग: क्लेशनाशं करोति सुतार्थी......' संतान से सुख मिलेगा।

#### पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्लेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए। आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी सातवे भाव में है। बृहत पराशर होरा के श्लोकों के अनुसार आपको पति के द्वारा अतीव संतोष प्राप्त होगी। आप धार्मिक हैं। आप मधुरभाषी हैं। आप सत्य में विश्वास रखती हैं और दूसरों का मार्गदर्शन करेंगी।

दसवें भाव में सिंह राशी है, यह राशीचक्र की पाँचवी राशि है और मनोरंजन को सूचित करती है, यह आभिनय, कला, मनोरजंन के स्थल,नाट्यग्रह, खेलने का मैदान आदि की परिचायक है, सिंह राशी का सरकारी उद्योग,पुदीना,औषधि, शेयर बाजार, बहुमूल्य धातुओं का खनन, जंगल, किला आदि पर स्वामित्व है। आप इनमें से किसी एक को अपना उद्योग क्षेत्र बना सकती हैं। आधुनिक युग में रात्रि मनोरंजन केंद्र, निशा-घर, क्लब, मेला, व्यापार मेला, होटल और पर्यटन आदि भी आपके लिए उचित होगा।

शनि ग्रह के गुण है सहनशीलता, दृढता, धर्य और विश्वास। कुछ ज्योतिषियों की राय है कि आपको हमेशा सफलता प्राप्त होगी। कुछ निपुण लोग कहते हैं कि दसवें भाव में शनि ग्रह की उपस्थिति यह सूचित करती है कि आप अपने उद्योग में अनेक मुसीबतों का सामना करेंगे। अन्तिम जीत हमेशा आपकी होगी। आपका दृढनिश्चय और जिद हमेशा आपको मुसीबतों में पहुँचा देगा। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें ताकि आपकी उद्योग क्षमता शारीरिक या मानासिक विषमताओं में उलझ न जाए।

मकर राशि में उपस्थित शनि ग्रह आपको महत्वाकांक्षी बनाएगा और आप उत्तरदायित्व पूर्ण काम करेंगे। आपके औधोगिक जीवन और कामीयाबी में पारिवारिक जीवन को भूलना नहीं चाहिए।

चन्द्र से राहु दसवें भाव में उपस्थित है। आपको दूसरो के व्यापार में सम्मिलित होने की ओर झुकाव है। आप निडर है। आप मह्त्व पूर्ण, प्रभाव शाली पदों पर पहुँचने के लिए काम करेंगे। आप जल्दी धन कमाना चाहते हैं।

जन्मकुण्डली में उपस्थित ग्रहों के स्थानों के आधार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण जानकारियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते हैं। आपके जन्म नक्षत्र से संबंधित उद्योग क्षेत्र निम्नलिखित हैं।

कारखाना, पुलिस, सेना, चिकित्सा क्षेत्र, सर्जरी, अदालत, जेल, सड़क, रेलवे, यंत्र, लोहा संबंधित उद्योग का क्षेत्र।

#### आमदनी

एकादश भाव जिसे लाभ स्थान भी कहते हैं आमदनी और आमदनी के मार्गों के विषय में सूचित करता है। यह स्थान कुंडली का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान समझा जाता है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ग्यारहवें स्थान में स्थित कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

लाभेश के छठ्ठे स्थान पर रहने से शत्रुओं का सामना करने का सामध्र्य प्राप्त होगा। समय आने पर क्रूर स्वभाव प्रगट करने में भी निपुण होंगे। विदेश जाकर बसने की संभावना है। श्रवणेन्द्रीय (कान)के रोगों से पीड़ित होना पड़ सकता हैं। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक लाभदायी होगी। रोग और शत्रुओं से सदा सावधान रहें।

ग्यारहवें भाव में एक शुभ ग्रह उपस्थित है। यह एक अच्छा योग है।

## खर्च, व्यय, नष्ट

द्वादश भाव व्यय भाव कहलाता है। खर्च और धनहानि के विषय में इसी भाव से जानकारी मिलती है।

बारहवाँ भावाधिपति पाँचवें स्थान पर रहने से ज्ञान संपन्न कार्य में ज़्यादा ध्यान देना होगा। संतान सुख में न्यूनता अथवा संतान प्राप्ति में विलंब होना संभव होगा। संतान सुख के लिए औषधोपचार और पुजा पाठ तीर्थ व्रत करना लाभदायी होगा।

# अनुकूल समय

# उद्योग या व्यवसाय के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दशमेश, दशम भाव और लग्न में उपस्थित शुभ ग्रह, लग्न और दशम भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर दशाकाल / अपहार आदि के अध्ययन के बाद उचित और श्रेष्ट समय ज्ञात किया जाता है।

## 15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

अनुकूल श् <u>रेष्ट</u>
श्रेष
10
अनुकूल
श्रेष्ट
अनुकूल
अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके करीयर के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ट
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ट

01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ट
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	श्रेष्ट
16-10-2031	05-03-2032	श्रेष्ट
13-08-2032	23-10-2032	श्रेष्ट
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	श्रेष्ट
12-09-2043	16-02-2044	श्रेष्ट
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
19-08-2047	11-10-2047	अनुकूल
29-03-2048	13-08-2048	अनुकूल

# विवाह के लिए अनुकूल समय

सप्तमेश, सातवें भाव में उपस्थित ग्रह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति की दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर वर्तमान दशा और अपहारादी के समय का निरूपण कर विवाह के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता है।

# 18 उम्र से लेकर 50 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
शुक्र	बुध	10-08-2007	10-06-2010	अनुकूल
शुक्र	केतु	10-06-2010	10-08-2011	अनुकूल
सूर्य	चंद्र	28-11-2011	28-05-2012	अनुकूल
सूर्य	मंगल	28-05-2012	03-10-2012	अनुकूल
सूर्य	राहु	03-10-2012	28-08-2013	श्रेष्ट
सूर्य	गुरु	28-08-2013	16-06-2014	अनुकूल
सूर्य	शनी	16-06-2014	29-05-2015	अनुकूल
सूर्य	बुध	29-05-2015	03-04-2016	अनुकूल
सूर्य	केतु	03-04-2016	09-08-2016	अनुकूल
सूर्य	शुक्र	09-08-2016	09-08-2017	श्रेष्ट
चंद्र	राहु	09-01-2019	10-07-2020	अनुकूल
चंद्र	शुक्र	10-06-2025	08-02-2027	अनुकूल
चंद्र	सूर्य	08-02-2027	10-08-2027	अनुकूल
मंगल	राहु	06-01-2028	24-01-2029	अनुकूल
मंगल	शुक्र	04-07-2032	03-09-2033	अनुकूल
मंगल	सूर्य	03-09-2033	09-01-2034	अनुकूल
राहु	गुरु	22-04-2037	15-09-2039	अनुकूल
राहु	शनी	15-09-2039	22-07-2042	अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से सप्तम भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके विवाह के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
23-11-2007	10-12-2008	श्रेष्ट
02-05-2009	30-07-2009	अनुकूल
21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ट
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ट
01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ट
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	श्रेष्ट
16-10-2031	05-03-2032	श्रेष्ट
13-08-2032	23-10-2032	श्रेष्ट
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल

# व्यापार के लिए अनुकूल समय

द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश पर गुरु की दृष्टी बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवें भाव पर बृहस्पति का दृष्टि, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर व्यापार के लिए अनुकूल और श्रेष्ट समय को ज्ञात किया जाता है।

## 15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
शुक्र	बुध	10-08-2007	10-06-2010	अनुकूल
सूर्य	चंद्र	28-11-2011	28-05-2012	श्रेष्ट
सूर्य	मंगल	28-05-2012	03-10-2012	श्रेष्ट
सूर्य	राहु	03-10-2012	28-08-2013	अनुकूल
सूर्य	गुरु	28-08-2013	16-06-2014	श्रेष्ट
सूर्य	शनी	16-06-2014	29-05-2015	अनुकूल
सूर्य	बुध	29-05-2015	03-04-2016	श्रेष्ट
सूर्य	केतु	03-04-2016	09-08-2016	अनुकूल
सूर्य	शुक्र	09-08-2016	09-08-2017	अनुकूल
चंद्र	मंगल	10-06-2018	09-01-2019	श्रेष्ट
चंद्र	राहु	09-01-2019	10-07-2020	अनुकूल
चंद्र	गुरु	10-07-2020	09-11-2021	श्रेष्ट
चंद्र	शनी	09-11-2021	10-06-2023	अनुकूल
चंद्र	बुध	10-06-2023	09-11-2024	श्रेष्ट
चंद्र	केतु	09-11-2024	10-06-2025	अनुकूल
चंद्र	शुक्र	10-06-2025	08-02-2027	अनुकूल
चंद्र	सूर्य	08-02-2027	10-08-2027	श्रेष्ट
मंगल	राहु	06-01-2028	24-01-2029	अनुकूल
मंगल	गुरु	24-01-2029	30-12-2029	श्रेष्ट
मंगल	शनी	30-12-2029	08-02-2031	अनुकूल
मंगल	बुध	08-02-2031	06-02-2032	श्रेष्ट
मंगल	केतु	06-02-2032	04-07-2032	अनुकूल
मंगल	शुक्र	04-07-2032	03-09-2033	अनुकूल
मंगल	सूर्य	03-09-2033	09-01-2034	श्रेष्ट
मंगल	चंद्र	09-01-2034	10-08-2034	श्रेष्ट
राहु	गुरु	22-04-2037	15-09-2039	अनुकूल
राहु	बुध	22-07-2042	08-02-2045	अनुकूल
राहु	सूर्य	26-02-2049	21-01-2050	अनुकूल
राहु	चंद्र	21-01-2050	23-07-2051	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों में विशेष रूप से एकादश और द्वितीय भावों से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके व्यवसाय के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ काल के अन्त समय विश्लेषण

23-11-2007	10-12-2008	श्रेष्ट
02-05-2009	30-07-2009	अनुकूल
21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ट
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ट
01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ट
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	श्रेष्ट
16-10-2031	05-03-2032	श्रेष्ट
13-08-2032	23-10-2032	श्रेष्ट
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	श्रेष्ट
12-09-2043	16-02-2044	श्रेष्ट

03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
19-08-2047	11-10-2047	अनुकूल
29-03-2048	13-08-2048	अनुकूल
29-12-2048	03-04-2049	अनुकूल

## ग्रह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथे भाव के अधिपति, चौथे भाव पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टी, चौथे भाव के स्वामी की गोचर स्थिति, इत्यादि विषयों को ध्यान में रख कर दशा अंतरदशा और अन्य बातों का विस्तृत अध्ययन करने के उपरान्त गृह निर्माण, निर्माणारंभ, द्वार की दिशा, मुख और चौखट आदि के मुहूर्त और समय ज्ञात किये जाते हैं, और निर्माण के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता हैं।

## 15 उम्र से लेकर 80 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
शुक्र	शनी	09-06-2004	10-08-2007	अनुकूल
सूर्य	गुरु	28-08-2013	16-06-2014	अनुकूल
सूर्य	शनी	16-06-2014	29-05-2015	अनुकूल
चंद्र	गुरु	10-07-2020	09-11-2021	अनुकूल
चंद्र	शनी	09-11-2021	10-06-2023	अनुकूल
मंगल	गुरु	24-01-2029	30-12-2029	अनुकूल
मंगल	शनी	30-12-2029	08-02-2031	अनुकूल
राहु	गुरु	22-04-2037	15-09-2039	अनुकूल
राहु	शनी	15-09-2039	22-07-2042	अनुकूल
गुरु	शनी	27-09-2054	10-04-2057	श्रेष्ट
गुरु	बुध	10-04-2057	17-07-2059	अनुकूल
गुरु	केतु	17-07-2059	21-06-2060	अनुकूल
गुरु	शुक्र	21-06-2060	20-02-2063	अनुकूल
गुरु	सूर्य	20-02-2063	10-12-2063	अनुकूल
गुरु	चंद्र	10-12-2063	10-04-2065	अनुकूल
गुरु	मंगल	10-04-2065	17-03-2066	अनुकूल
गुरु	राहु	17-03-2066	09-08-2068	अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके ग्रह निर्माण के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
23-11-2007	10-12-2008	श्रेष्ट
02-05-2009	30-07-2009	अनुकूल

21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ट
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ट
01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ट
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	श्रेष्ट
16-10-2031	05-03-2032	श्रेष्ट
13-08-2032	23-10-2032	श्रेष्ट
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	श्रेष्ट
12-09-2043	16-02-2044	श्रेष्ट
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
19-08-2047	11-10-2047	अनुकूल

29-03-2048	13-08-2048	अनुकूल
29-12-2048	03-04-2049	अनुकूल
20-09-2050	16-10-2051	अनुकूल
16-11-2052	15-12-2053	अनुकूल
11-01-2055	30-01-2056	श्रेष्ट
14-02-2057	24-02-2058	अनुकूल
17-07-2059	25-11-2059	अनुकूल
05-03-2060	22-07-2060	अनुकूल
03-09-2062	01-10-2063	अनुकूल
01-11-2064	30-11-2065	अनुकूल

# दशा / अपहार के फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। कुंडली में ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों को जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

#### चंद्र दशा

इस दशा में आध्यात्मिक और भक्ति कार्यों में आपका अधिक ध्यान होगी। इससे सुख और शान्ति मिलेगी। आप बड़ो की आदर करेंगी। सुख और समृद्धि बढेगी। औरतों से मिलजुल कर रहने का स्वभाव रहेगी। भोजन और खान-पान में कुछ नियमित परिवर्तन होगा। अपनी तन्दुरुस्ती की तरफ ज़्यादा ध्यान देनी होगी। थकान का अनुभव होने की संभावना है। शरीर की सन्धियों (जोड़ों) में दर्द हो सकती है। यह विवाह और संतान प्राप्ति के लिए युक्त समय माना जाता है। अथवा परिवार में विवाह व जन्म का उत्सव मनाया जायेगा।

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा बलवान है। इस कारण घर में मांगलिक कार्य, वाहन प्राप्ति, भाग्योदय, धन प्राप्ति आदि फल प्राप्त होंगे। सुखीजीवन, मन उमंग और उत्साह से भरा रहेगा। पहले से अधिक शान्ति और सुख का अनुभव होगा। फूलों से और सुगन्धित वस्तुओं से आनन्द मिलेगा। पदोन्नति और आमदनी में वृद्धि होगी। दूसरों से विशेषकर औरतों की सहायता प्राप्त होना संभव है। चाँदी, मोती, रत्न, ईख, जल आदि सफ़ेद वस्तुओं से लाभ मिलने की संभावना है। श्रेष्ठ फल पश्चिमोतर दिशा से प्राप्त होगा। मिठाई खाने का योग है। समुद्र तल से मिलनेवाली वस्तुओं से लाभ होगा।

#### (10-07-2020 >> 09-11-2021)

चन्द्र दशा में बृहस्पित की अन्तर्दशा आपको बहुत आदर्शवादी बनाती है। निवासस्थान की सुविधा बढ़ाने तथा नवीनीकरण के लिए आप धन और समय दोनों का व्यय करेंगे। व्यक्तिगत रूप से सौन्दर्य के प्रति भी अत्यधिक संवेदनशील हो जायेंगे। आप के प्यारे मित्रों का संपर्क एवं सम्मान आपको प्राप्त होगा। मन को आनंद और उत्साह प्राप्त करानेवाले मेहमानों का आगमन होगा। अनेक तरह के उपहार प्राप्त होने का योग है। सचमुच यह आपके लिए श्रेष्ठ समय है।

#### (09-11-2021 >> 10-06-2023)

चन्द्र दशा में शनि की अन्तर्दशा में आपके निकट संबंधियों का व्यवहार निराशाजनक होगा। शारीरिक अस्वस्थता, मानसिक क्लेश और दुर्घटनाओं को भी नकारा नहीं जा सकता। आपको किसी न किसी कारण से माँ की दूरी सहनी पड़ेगी। इस काल में अनेक अप्रत्याषित घटनाओं का सामना करना होगा। इच्छा के विरुद्ध अनेक कार्यों का सामना करना पड़ेगा।

## (10-06-2023 >> 09-11-2024)

चन्द्र दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपको चिरस्मरणीय अच्छे अच्छे कार्य बनते दिखाई देंगे। आपके उद्देश्य से अधिक विजय सभी कार्यों में प्राप्त होगी। आपके मन में कोई विशेष लक्ष्य हैं तो दृढ़ता तथा इच्छाशक्ति लगाकर सफलता प्राप्त करने का यह अच्छा समय है। घर में मांगलिक कार्य होने की संभावना भी जान पड़ती है।

#### (09-11-2024 >> 10-06-2025)

चन्द्र दशा में केतु की अन्तर्दशा में मन निर्भयता से भर जायेगा। यह होते हुए भी चपल मनोवृत्ति जागृत होगी। कष्ट-परेशानियों से रक्षा पाने के लिए हर एक कदम बड़े ध्यान से रखना होगा। सफलता के लिए पर्याप्त परिश्रम करना होगा।

#### (10-06-2025 >> 08-02-2027)

चन्द्र दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में आपको सब तरह के लोगों से बिना आयु या लिंग भेद न रखते हुए संयत व्यवहार करना पड़ेगा। सामाजिक जीवन में संबंधित सहकार्य के मामलों में आपको सफलता मिलेगी। आपकी कार्यकुशलता के कारण अन्य श्रेष्ठ व्यक्ति आपकी ओर आकर्षित होंगे। वैवाहिक और भवन निर्माण विषयक योजनायें सफलता की ओर बढ़ेगी। संतानोत्पत्ति की संभावना को भी नकारा नहीं जा सकता।

#### (08-02-2027 >> 10-08-2027)

चन्द्र दशा में सूर्य का अंतर आपको प्रोत्साहन एवं बहुमान आसानी से प्राप्त करायेगा। आप को आत्मानुभुती से अधिक परिश्रम करने की इच्छा पैदा होगी। सभी तरह के भौतिक सुख आपको प्राप्त होंगे। शत्रु आपको किसी भी तरह हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। आप की सफलता निश्चित है। प्रगति के बहुआयामी रास्ते उपलब्ध होंगे। सरकारी कामों में सफलता प्राप्त होगी।

#### मंगल दशा

इस दशा में बहुत से साधन कमाये जायेंगे। किठन परिश्रम भी करना पड़ेगा पशु-पिक्षयों से बड़ा लाभ होगा। बच्चों या भाइयों से झगड़े हो सकते हैं। दुराचारी व्यक्तियों के संपर्क में रहने की संभावना है। िफज़ूल खर्च होनेवाला है। रसोई घर में आग से नुकसान न होने के लिए ध्यान देना आवश्यक है। शरीर की थकावट और पीलिया होने की संभावना है। स्वास्थ्य का बराबर परीक्षण करना या आवश्यक दवाएँ लेना उचित रहेगा। सामान्यत: यह दशा सुखमय रहेगी और आपकी आशाओं की पूर्ति करेगी। पिता और गुरु के प्रति आपका अपमान जनक व्यवहार होने की संभावना है, सतर्क रहें। मंगल दशा के प्रारंभ से आप सामर्थ्यवान माने जायेंगे। विवाहित हों तो जीवन साथी के लिए यह उचित समय माना जाता है। धन लाभ होगी।

#### (10-08-2027 >> 06-01-2028)

मंगल दशा में मंगल के अंतर में अनेक दोषयुक्त घटनायें घटित होगी। जाग्रत रहने से अनेक ऐसी घटनाओं से बच सकते हैं। धारयुक्त हिथयारों का इस्तेमाल करते हुए सजग रहें। शारीरिक खतरे की संभावना है। बिना कारण के आप अपने निकट के मित्रों से भी नाराज़ होंगे। व्यर्थ के शत्रु उत्पन्न होंगे। दूसरों की संपत्ति हासिल करने की इच्छा होगी। जीवन में निराशा जनक रुकावटें भी हो सकती है। उनका निवारण अनिवार्य होगा।

#### (06-01-2028 >> 24-01-2029)

मंगल दशा में राहू की अन्तर्दशा में अवांछनीय व्यक्तियों से धोखा होने की संभावना है। चूल्हे, बिजली या सवारियों से दुर्घटनाएँ हो सकती है। इस समय खतरे की संभावना है। इस काल में होनेवाले खतरों से जाग्रत रहने की आवश्यकता है। समय समय पर विशेषज्ञों से परामर्श उपयोगी होगा। सजगता से काम करें तो आपत्तियाँ और हानियाँ कम होगी। मारक आयुध और विस्फोटक वस्तुओं से दूर रहें। रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी सलाह अनिवार्य है।

#### (24-01-2029 >> 30-12-2029)

मंगल दशा में बृहस्पित के अंतर में आपका मन दृढ़ रहेगा और सभी कार्य उत्साह से किए जाएंगे। आनंदपूर्ण चिंतन से मन उल्लासित रहेगा। आप तीर्थ स्थानों की यात्रा करेंगे। इस समय अनेक पंडितो से परिचित होना पड़ेगा। आर्थिक उन्नति होनेवाली है। कर-विभाग से कोई समस्या खड़ी हो सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

#### (30-12-2029 >> 08-02-2031)

मंगल दशा में शिन के अंतर में चिंतन का नियंत्रण करना मुश्किल है। मन में तरह तरह के विचार आते रहेंगे। पहले जैसे कोई काम करने में धैर्य नहीं रहेगा। व्यर्थ का भय उत्पन्न होगा। व्यर्थ की उत्कण्ठा से मन उद्वेगपूर्ण रहेगा। हर जगह खतरे की आशंका उत्पन्न होगी। मन शंका-कुशंका के कारण अस्थिर रहेगा। ईश्वर पर भरोसा रखना ही एक मात्र श्रेष्ठ मार्ग हैं। इस दशा के बाद तकलीफें कम होगी।

#### (08-02-2031 >> 06-02-2032)

मंगल दशा में बुध के अंतर में दुष्ट शत्रुओं का त्रास सहना पड़ेगा। अधर्मी और नीच प्रवृत्ति के लोग आप के विरुद्ध क्रियाशील रहेंगे। अचरज की बात होगी कि आप उन सब पर विजय पाएँगे। अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति आप की सहायता करेगी। अपना निवासस्थान अधिक सुविधा जनक बनाया जायेगा। नये मकान के निर्माण की भी संभावना है।

#### (06-02-2032 >> 04-07-2032)

मंगल दशा में केतु की अन्तर्दशा में आपको बिजली से संचालित उपकरणों से खतरा पैदा हो सकता है। नित्य उपयोग में लिए जानेवाले बिजली के उपकरणों की जाँच करवाना लाभदायक होगा। उदर रोग से पीड़ित होने की संभावना रखते हैं। भोजन में नियंत्रण लाना अनिवार्य होगा। कृमि विकार संभव है।

#### (04-07-2032 >> 03-09-2033)

मंगल दशा में शुक्र की अन्तर्दशा आपको विचलित रखेगी। आप जल्दी से अकारण नाराज़ हो जाएंगे। परिवार से अलग रहना पड़ेगा। मारक आयुधों से दूर रहें। कौटुँबिक वातावरण अच्छा रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। किसी के वियोग की संभावना है। विपरीत लिंग का परिचय बदनामी का कारक हो सकता है।

#### (03-09-2033 >> 09-01-2034)

मंगल दशा में सूर्य के अंतर में आपकी प्रतिष्ठा और अधिकार में वृद्धि होगी। आप को अधिकार और विरासत में संपत्ति की उपलब्धि होगी। यह आप के लिए जनसम्मति एंव मान्यता का समय है। फिर भी स्वजनों से शत्रुता का अनुभव होगा। राजकार्य में सफलता प्राप्त करना सरल होगा।

#### (09-01-2034 >> 10-08-2034)

मंगल दशा में चन्द्र का अंतर आपको सहज सफ़लता प्राप्त करवायेगा। कई तरह के लाभ भी प्राप्त होंगे। प्रगति होगी। जो आपके विरोधी थे वे आपके दोस्त बन जायेंगे। आप से दूर भागनेवाले आप के निकट आयेंगे। अप्रतिक्षित दिशाओं से अनेक प्रकार की सहायता प्राप्त होगी। उच्च अधिकारियों और बडों से मान्यता प्राप्त होगी। इस काल में संतोष और सौभाग्य दोनों का साथ बना रहेगा। घर में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा।

## राहु दशा (सर्पी दशा)

राहु जुआ और कल्पनाओं का देवता है। इस दशाकाल में व्यवहार में परिवर्तन, बुराई, चर्म रोग, अस्वस्थता इत्यादि आ सकती है। परिवार के लोग और साथी लोग आपको शंका की दृष्टि से देखेंगे। महिलाओं केलिए यह मन दुखानेवाली बात है। इस काल में किसी से झगडा न होने के लिए ध्यान देना है। संतान को कष्ट होने की संभावना है। किठन रोगों से पीडा होने की संभावना है। विषबाधा से बचने की कोशिश करनी होगी। विरोधियों से आपकी सामना होगा। पढाई करनेवाली महिला की पढाई में विक्षेप होगा। रिश्तेदार भी विरोधी बनने की संभावना है। उच्च अधिकारियों का अनुग्रह कम होगा। गले में कष्ट और आँखों के रोग होने की संभावना है। दु:ख और अभाव का सामना करना होगा। ई.एन.टी डाक्टर के सलाह के अनुसार रोग होने से पहले ही उपचार करना अच्छा होगा। राहु सब के लिए एकसा नहीं होता। अच्छे स्थान पर हों तो सन्तान सुख, समृद्धि और सब प्रकार के ऐश्वर्य देनेवाला होता है। स्थान विभ्रांश और दूर यात्रा का योग है। अधिकार से वंचित होना, परिवार से वियोग इत्यादि सर्वसाधारण है। जुआ, सट्टा इत्यादि से प्रभावित होंगी। असाधारण रोगों का शिकार बनना पड़ेगा। ज़हरीली वस्तुओं से बचते रहना आवश्यक है। शत्रुओं के आक्रमण से सजग रहना होगा। अपने लोगों से दृश्मनी बनेगी। भक्तियुक्त जीवन भविष्य के लिए सुखद आश्वासन दिला सकता है।

#### (10-08-2034 >> 22-04-2037)

राहू दशा में राहु की अन्तर्दशा में आपका समय अच्छा नहीं होगा। परिवार में किसी भी तरह का वियोग हो सकता है। दु:खी होना पड़ेगा। आपको निराशा और दु:ख में स्वयं को नियंत्रित करना होगा। आपके संबन्धियों को भी सुख एवं दु:ख दोनों के मिश्रित फल की प्राप्ति होगी। विदेशागमन की आशा रखने में निराशा का अनुभव हो सकता है। इच्छानुसार सुख का अभाव हो सकता है।

#### (22-04-2037 >> 15-09-2039)

राहू दशा में बृहस्पित के अंतर में आपकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। सरकारी सेवक आपके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। उच्चाधिकारियों से अच्छा व्यवहार प्राप्त हो सकता है। आपको विवाह आदि मंगलकार्यों में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति निश्चित होगी। नये सदस्य परिवार में आयेंगे या नये बालक का जन्म हो सकता है।

#### (15-09-2039 >> 22-07-2042)

राहू दशा में शनिश्चर के अंतर में शारीरिक निर्बलता का अनुभव होगा। पित्त के प्रकोप की संभावना है और उसके कारण स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। किसी प्रधान कारण के बिना अपने प्रियजनों और मित्रों के बीच झगड़ा उत्पन्न होगा। दूर देश की यात्रा के माध्यम से अथवा स्वनिवास स्थान के निमित्त दु:ख सहना होगा।

#### (22-07-2042 >> 08-02-2045)

राहू दशा में बुध के अंतर से नए संबंध स्थापित होंगे। आपको कई नये मित्र प्राप्त होंगे। मित्र प्रतिष्ठित होंगे और चारों ओर से सन्मान प्राप्त होगा। आपको अनापेक्षित रूप में धन का लाभ होगा। आप चिंतन और मनन के कार्य में क्रियाशील रहेंगे।

#### गुरु दशा

#### **\*** 09-08-2052

इस दशा में आप उत्साही महिला बनेंगी। श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति की संभावनायें हैं। अन्य की अपेक्षा आप को ज़्यादा सफलता मिलती दिखाई देगी। आप जो कुँवारी हों तो विवाह का योग निकट है। इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। संतान प्राप्ति का योग भी निकट है। जीवन साथी से सुखद व्यवहार होने की संभावनायें हैं। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। घर के बड़ों या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव मिलता रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। स्वजनों से वियोग व्यथा सहनी होगी। ई.एन.टी डाक्टर की सलाह लेकर उन अवयवों का उपचार करना अच्छा होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। परिश्रमशील महिला का स्वभाव होने पर श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होगी। गुरु दशा का आरंभकाल दोष युक्त होते हुए भी उसका अन्तिम समय सुखद और लाभदायक होता है।

# ग्रह दोष और उपाय

#### मांगलिक दोष

जन्मपित्रका में मंगल के प्रभाव को बहुत अधिक महत्व प्राप्त है। मंगल या कुज का विवाह संबन्धी विषयों तथा गुणमेंलन आदि के विश्लेषण में बहुत महत्व है। सामन्य तया जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें या द्वादश भाव में हो तो मंगल दोष माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों में मंगल के प्रभाव को बताते हुए अनेक नियमों का संग्रह दिया गया है। उन नियमों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका दुष्प्रभाव कुछ कारनों से क्षीण हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपित्रका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में चौथा स्थान पर है।

यह स्थिती मंगल दोषयुक्त है और कुछ हद तक अमंगलकारी है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की स्थिति के अनुसार मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

## इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

#### स्पष्टीकरण

स्वास्थ्य और विचार आपका सबसे बडा धन बन सकता है। आपकी कार्यशील रहने की पारिवारिक सदस्यों से तारीफ होगी। आपकी वास्तव में जो इच्छा है वह न मिलने के कारन आपको कार्य के प्रति समर्पित स्वभाव से ही सुखी पारिवारिक जीवन प्राप्त करना पड सकता है। व्यर्थ खर्च टालने हेतू अच्छी योजनायें बनायें। पारिवारिक सदस्यों का आरोग्य बिमा निकालना आपके लिए अच्छा रहेगा। आपके प्यारे मित्रों के साथ रहने से आप ताकतवर बन सकते है। निजी संबंधो को अच्छा बनाने हेतू शांत और नम्र रहे। समयपर डॉक्टर की सलाह लेने से आप स्वास्थ्य पा सकते है।

#### उपचार

तृतीय घर के मंगल के अशुभ परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते हैं।

आपके वैवाहिक जीवन की समृद्धी के लिये कुज के बुरे प्रभावों को कम करने के लिये दुसरे मंगलवार और दुसरे शनिवार को भगवान सुब्रमण्यम को अखंड दिपक प्रदान करें। हमेशा भगवान पर श्रद्धा रखें और भगवान की एक छबी घर में रखें। छबी के पीछे २७ सिक्के लाल रंग के कपडे में बांधकर रखें और वह चार लोगों को मंगलवार के दिन दान दें। छबी पर कुमकुम का इस्तेमाल करें आरैर उसे अपने माथे पर लगायें। नागदेवता को दुध और गुलाब जल का अभिषेक करें और १२ परिक्रमा लगायें।

## राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी गित परस्पर संबंधित है और एक ही अंग के भाग होने के कारण दोनों हर समय वह एक दुसरों कें विरूद्ध होते है, किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है। सामान्य रूप सें, राहु सकारात्मक है और गुरू के प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनी के विघ्न को दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इस प्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है। इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद की सूक्ष्म प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी के लिए माना जाता है।

## राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही है।

## राहु दोष के उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष न होने से, आपको कोई उपाय करने की जरूरत नही हैं।

## केतु दोष

इस जन्मकुंडली मे केतु दोष नही है।

## केतु दोष हेतु उपाय

आपकी जन्मकुंडली में केतु दोष न होने से, आपने यह उपाय करने की जरूरत नही हैं।

# परिहार

## नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने अश्विनी नक्षत्र में जन्म लिया है आपके नक्षत्र के अधिपित केतु है। आप एक समाधान प्रेमी है। सही समय पर अपने विचारों को व्यक्त करने में संदेह रखने पर आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति में देर लगेगी। जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ ग्रहों की दशा आपके लिए प्रतिकूल होगी। अश्विनी नक्षत्र होने के बावजूद सूर्य, मंगल और गुरु दशा में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस प्रतिकूल दशा में आपके मानासिक स्वभाव में प्रत्यक्ष बदलाव होंगे। दूसरों के उपदेशों को पूरी तरह न मानने से आप उनके सामने स्वेछाचारी बनेंगे। बुरे दोस्ती से दूर रहना अच्छा होगा। इस समय, लाभ हीन चीजों की ओर झुकाव ज्यादा होगा।

ऋज्ब्प्रक्षःच्रिकङ-क्ष्मच्ङ्म्य्-च्च्र्ॠङझ्१ट-ङॠच्क्ष्झ्१ट मेष जन्म राशी का अधिपति मंगल ग्रह है। ऐसी परिस्थिति भी होगी जब आपको सख्ती और शक्ति से व्यवहार करना पड़ेगा। कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र के दिवस पर व्यापार और शुभ कार्य को त्यागना चाहिए।

इस प्रतिकूल दशा में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यत: विरुद्व नक्षत्रों पर अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें। इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादाओं का प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है।

प्रतिदिन मंदिर में दर्शन या अश्विनी, मघा और मूल नक्षत्र में क्षेत्र दर्शन अच्छे परिणामो को उत्पन्न करेगा। श्री गणेश भगवान की प्रार्थना करे, जो रुकावटों को दूर करता है। हाथियों को भेजन खिलाने से आपको भाग्य की प्राप्ती होगी।

केतु नक्षत्र के अधिपति की प्रर्थना करना चाहिए। केतु और राशि अधिपति को प्रसन्न करने के लिए आपको लाल रंग का कपड़ा पहनना चाहिए।

इसके अलावा मंगल ग्रह के अधिपति को प्रसन्न करने का लक्ष्य लाभदायक है।

अश्विनी अधिपति अश्विनी नक्षत्र का जन्म नक्षत्र अधिपति है। अश्विनी नक्षत्र को प्रसन्न करने के लिए इनमें से किसी मंत्र का विश्वास से अलापन करना चाहिए।

- 1 ॐ अशविना तेजस चक्षुह प्राणोन सरस्वती वीरयाम् वाचेन्द्रो बालेन्द्राय ददुरिन्द्रयम्
- 2 ॐ अश्विनी कुमाराभ्याम् नम:

इसके अलावा, जानवरों, पिक्षयों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है। मुख्यत: अश्विनी नक्षत्र के जानवर घोड़े का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपको जीवन में ऐश्वर्य और समृद्धि प्राप्त होगी। अश्विनी का औद्योगिक पेड़, काजिरम्(जहर पेड) और उसके शाखाओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी, शकुन पक्षी को पीड़ा नहीं देनी चाहिए। अश्विनी नक्षत्र का मूलतत्व धरती है।ज्योतिषयों के अनुसार धरती की पूजा करनी चाहिए,जो मूलतत्वों में से एक है और अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों को समृद्धि के लिए धरती से मैत्री भाव रखना चाहिए।

## दशा परिहार

दशा के अशुभ प्रभावों का परिहार हर ग्रह की दशा में भाग्य और दुर्भाग्य के सामान्य प्रभाव जन्मकुंडली में स्थित ग्रहों के स्थानों पर आधारित है। शुभ और अशुभ ग्रहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कौनसा दशा-समय आपके लिए अनुकूल नहीं है। प्रतिकूल दशा-समय के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का अनुष्ठान करना पड़ेगा। जन्मकुंडली में स्थित प्रतिकूल दशा-समय और उसके लिए किए जाने वाली धार्मिक विधियों के विषय में यहाँ उल्लेख किया गया है।

## दशा :चंद्र

अभी आप चंद्र दशा से गुजर रहे है।

चंद्र छठ्ठा भाव में है। चन्द्र बिना पक्षबल के उपस्थित है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुंडली की ग्रह स्थिति के आधार से चन्द्र दशा में आपको प्रतिकूल प्रभावों का अनुभव करना पड़ेगा। इस समय आपको कई अप्रत्याशित समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। श्रम युक्त मानसिक और शरीरिक गतिविधियों से आपको दूर रहना चाहिए। श्रेष्ठ व्यक्तियों से लेन देन में विशेष ध्यान देना होगा। चन्द्र दशा के अशुभ प्रभाव की तीव्रता गोचर में चन्द्र के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती हैं। यदि चन्द्र प्रतिकूल स्थान से हैं तो जिन समस्याओं का आपको सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ संक्षेप में

उल्लेख किया गया हैं। चन्द्र के कमजोर होने से आपको अप्रत्याशित अनीष्टों और धन संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपको अनिद्रा की समस्या हो सकती है। आपकी अनावश्यक परेशानी आपकी अन्य परिस्तिथियों को भी प्रभावित कर सकती है। इस समय आपकी वैचारिक और भावनात्मक सोच में प्रबल परिवर्तन होंगे। प्रतिकूल स्थितियों में आप अपने ही अभिप्रायों से विचलित होगे। इस कठिन परिस्थिति में जीवन आपको बोझ लगेगा। इस समय पारिवारिक सम्बधों को बनाए रखना आपके लिए कठिन होगा। मामूली सी बाते भी आपको व्याकुल करेंगी। अपने शब्दों को नियंत्रित रखने का प्रयत्न करें। जब चन्द्र प्रतिकूल स्थान से हो तो आपको स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अपच (अजीर्ण), साँस लेने में मुशकिल, थकावट, और अत्यधिक प्यास आदि का प्रादुर्भाव हो सकता है। चन्द्र दशा में अगर इस प्रकार की स्तिथियाँ हो तो यह जानना चाहिए कि चन्द्र प्रतिकूल स्थान से हैं। जिन लोग इस प्रकार की समस्याओं को महसूस कर रहे हों उन्हें चन्द्र की शान्ती के लिए कुछ प्रयत्न करने पडेंगे। इन प्रयासों से चन्द्र के अशुभ प्रभावों को कम किया जा सकता है। जिससे आपका जीवन सुखद बनाया जा सके। इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर निम्न दिशा-निर्देशों का सुझाव दिया जा रहा हैं।

#### वस्त्र

स्वच्छ, शुभ्र और उज्वल रंग चन्द्र को प्रिय हैं। इसलिए सफेद और उज्जवल वस्त्र पहनने से चन्द्र को अनुकूल किया जा सकता है। इस प्रकार के वस्त्र सोमवार को पूर्णिमा और रोहिणी नक्षत्र में चन्द्र की उपासना कर पहनना लाभदायक होता हैं।

#### प्रातकालीन प्रार्थना

प्रात:कालीन प्रार्थना ग्रहों के अशुभ प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन और शरीर को नयी उर्जा प्रदान करती है। चन्द्र दशा में हमेशा सूर्योंदय से पहले उठना चाहिए। अपने शरीर को शुद्ध करने के बाद चन्द्र के अनुग्रह की याचना करें। मन से सभी चिन्ताओं और विचारों को दूर करने का प्रयत्न करें।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय सौम्याय देवगुरवे भ्रगुनन्दनाय सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च नित्यम नमो भगवते गुरवे वराय पापनाशन लोकेश देव देव नमोस्तुते शशांकनिष्टसंभुतं दोषजातम् विनाशाय

इस प्रार्थना को हर दिन नींद से उठते ही शय्या में पुरब की दिशा की ओर मुंह करके करना चाहिए।

#### उपवास

शास्त्रों में उपवास तथा व्रत का शरीर तथा मन के शुद्धिकरण के लिए विधान हैं इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। चन्द्र को अनुकूल करने के लिए आपको सोमवार के दिन में उपवास लेना चाहिए। चन्द्र के अशुभ प्रभावों को कम करने लिए आपको अपने जन्म नक्षत्र के दिन में उपवास रखना चाहिए। उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मादक चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। इन दिनों में सात्विक खाद्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जिन्हें पचने के लिए आसानी हो उनका उपयोग करना चाहिए। कठिनाई से पचने वाली, तीखी, मसालेदार, तैलिय, गरम पदार्थों का परहेज करना चाहिए। आप शांतभाव से या पूरी तरह सकारात्मक मनस्तिथि में उपवास रख सकते हैं। धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं हैं। आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेष और भाषा पर संयम रखें।

#### दान

स्वेच्छा से भिक्षा या दान देना अपने पापों के परिहार का श्रेष्ठ मार्ग हैं। चन्द्र को अनुकूल करने के लिए सफेद चावल, मोती, सफेद रेशमी वस्त्र ,कपुर, दुध और दही चाँदी से बनी चन्द्र की मुर्ति, चीनी आदि का दान देना उचित है।

#### फुल

चन्द्र को अनुकूल करने के लिए आपको सफेद फूलों से उपासना करनी चाहिए। आप सफेद कमल,सफेद कचनार और मिल्लिका फुल आदि को भी धारण कर सकते हैं। इन फूलों को पहनते समय इस मंत्र का जाप करे।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम् सन्दधे शिरस तेन शशंक्को मे प्रसीदतु

#### पूजा

चन्द्र को अनुकूल करने के लिए कुछ पूजा विधियों का निर्देश किया हैं। नवग्रहों के मंदिर में दर्शन करना और सफेद फूलों से बनी माला से पूजा करना लाभदायक हैं। पूर्णिमा का दिन और जन्म नक्षत्र दिवस इस पूजा के लिए उपयुक्त है। निपुण ज्योतिषियों के मार्गदर्शन के अनुसार ही इस पूजा विधि का पालन करना चाहिए। चन्द्र को अनुकूल करने के लिए चन्द्रग्रहण,अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र के दिनों में पूजा नहीं करनी चाहिए।

#### मन्त्रों का जाप

जो लोग किसी भी कारणवश धार्मिक अनुष्ठान करने में असमर्थ हों तो व प्रार्थना और अर्चना द्वारा भी ग्रहों के विपरीत परिणामों को कम किया जा सकता है। आपको पूरी श्रद्धा से मंत्र पाठ द्वारा ही सफलता प्राप्त हो सकती हैं। निम्न मन्त्रों के जाप से आप चन्द्र को अनुकूल बना सकते हैं।

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतमयाय धीमहि तन्नो: सोम: प्रचोदयात्

अत्यंत विश्वास और भक्ति से इन मंत्रो का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्धि प्राप्त होगी।

चन्द्र को प्रसन्न करने के लिए चन्द्र के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है -

ॐ श्री मतये नमः
ॐ शास्त्रधराय नम:
ॐ चन्द्राय नम:
ॐ तारधीशये नम:
ॐ निशाकराय नम:
ॐ सुधानिधये नम:
ॐ सदाराध्याय नम:
ॐ सत्पदये नम:
ॐ सादुपुजिताय नम:
ॐ वीराय नम:
ॐ जयोध्योगय नम:

### अंगुलिक यंत्र

अगुंलिक यंत्र ग्रहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय हैं। चन्द्र को प्रसन्न करने के लिए अगुंलिक यंत्र नीचे प्रस्तुत किया गया हैं:

7	2	9
8	6	4
3	10	5

इस यन्त्र को विशुध्द मन से पहनने से अशुभ प्रभावों का दूर किया जा सकता है और यह आपके मन को एक नई उर्जा प्रदान करता हैं। यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं तो यह यंत्र एक कागज़ के तुकडे पर लिखकर अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबल पर रखना चाहिए।

ऊपर दिए गए परिहार का 10-8-2027 तक आचारण करना चाहिए।

#### दशा :मंगल

आपकी मंगल दशा 10-8-2027 को शुरु होती है।

आपका जन्म नक्षत्र अश्विनी है। मंगल कुंभ राशी में है। मंगल चौथा भाव में है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

जन्मकुंडली की ग्रहस्थित के आधार पर मंगल दशा में आपको प्रतिकूल स्थितियों से गुजरना पड़ेगा। इस समय सफलता पाने के लिए आपको अप्रत्याशित समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। छोटे मोटे काम के लिए भी आपको दूसरों पर निर्भर होना पड़ेगा। अपने उत्साह और ओज को बनाए रखने के लिए प्रत्येक बात का ध्यान रखना चाहिए। मंगल दशा के अशुभ प्रभावो की तीव्रता मंगल के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती हैं। मंगल के प्रतिकूल स्थान से होने से जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया है। यदि मंगल कमजोर है तो आपके कार्यक्षेत्र में कुछ बदलाव होने की संभावना है। इसलिए आपको आपकी विशिष्ट योग्यताओं को बनाए रखने के लिए विशेष प्रयत्न करने चाहिए। इस समय जानबुझकर या अनजाने में आप कुछ प्रतिकूल परिस्तिथियों के कारण चर्चा का विषय बन सकते हैं इसलिए विपरीत लिंग के व्यक्तियों और अन्य सामाजिक गतिविधियों में सतर्कता पूर्वक संयमित व्यवहार रखें। आपको अपनी जीवनशैली पर नियंत्रण रखना चाहिए। इस समय दोस्तों से मिलते वक्त आपको उनके खिलाफ नहीं होना चाहिए। प्रतिकूल परिस्थित में अपने क्रोध पर नियंत्रित न रख पाना आपके लिए नुकसानदेह हो

सकता है। दूसरों के मामले में दखल देने की मानसिकता के कारण आप अनावश्यक समस्याओं में पड़ सकते हैं। मंगल को कलह का उत्तरदायी माना जाता हैं। इसलिए जब मंगल प्रतिकूल स्थान से हैं तो छोटे - छोटे वाद विवाद और बहस बड़े झगड़े का कारण बन सकते हैं। इसलिए प्रतिकूल परिस्थियों से दूर रहे तथा अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण रखे। किसी बातचीत में शमिल होते समय अपने विरोधियों से आदर का भाव बनाए रखना चाहिए। इस समय अनेक रोगों का सामना करना पड़ेगा। वातावरण में होने वाले परिवर्तन से आपका स्वास्थय प्रभावित होगा। अगर आप इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि मंगल दशा प्रतिकूल हैं। जो लोग इस प्रकार की कठिनाइयों को महसूस कर रहे हैं उन्हें मंगल को अनुकूल करने के लिए कुछ मार्ग अपनाने चाहिए। मंगल ग्रह की शांति के उपायों के करने से मंगल के विपरीत प्रभावों से मुक्त होकर सुखद जीवन प्राप्त किया जा सकता है। इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर मंगल के प्रतिकूल होने से जिन उपायों को करना चाहिए उनका विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

#### वस्त्र

मंगल एक लाल ग्रह है। लाल रंग मंगल ग्रह का प्रिय रंग है। मंगल ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको मंगलवार में लाल रंग का वस्त्र पहनना चाहिए। इसी प्रकार का रंग, रेशमी कपड़ा पहनना लाभदायक है।

## देव पूजा, आराधना, उपासना

जिनकी जन्मकुंडली में मंगल ग्रह उच्च राशी में हैं उनको सुब्रमण्यम देवता की पूजा करनी चाहिए और जिनकी युग्म राशी में हैं उनको भद्रकालि देवी की पूजा करनी चाहिए।

#### प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातःकालीन प्रार्थना अशुभ प्रभावो को दूर करने के साथ - साथ आपके मन तथा शरीर को नयी उर्जा प्रदान करता है। चन्द्र दशा मे हमेशा सूर्योदय से पहले उठना चाहिए। अपने शरीर को शुध्द करने के बाद गुरु की अनुग्रह की याचना करे। मन से सभी चिताओ से मुक्त कर एकाग्रता से प्रार्थना करनी चाहिए।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च नित्यम नमो भगवते गुरवे वराय देवदेव जगन्नाथ देवता नमापीनश्वरा भुपुत्रं अनिष्ट संभूतं दोषजताम् विनाश्येत

इस प्रार्थना को हर दिन नीद से उठते ही शय्या मे पुरब की दिशा मे बैठकर जप करना चाहिए।

#### उपवास

उपवास खाद्य पदार्थ के उपयोग में किफायत करने के आचरण का ध्योतक है। उपवास रखना और व्रतादि अनुष्ठानों का पालन करने का सर्वोपरि लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए। उपवास पचनसंस्थान को स्वस्थ रखने के उद्देश से तथा धार्मिक आस्था से किया जाने वाला लंघन है। इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। इसलिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए। ग्रहों के अनुकूलन के लिए किये जाने वाले उपवास में ठोस अन्न आदि खाद्य, मांसाहार, मदिरा सेवन, आदि निषिध मने गए हैं अतः इनके सेवन वर्जित है। उपवास के दिन सौम्य, सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। अधिक तीखे, चटपटे, खट्टे, तथा पचने में भरी खाद्य उपवास में वर्जित माने जाते हैं। फलाहार तथा कुछ हलकी खाद्य सामग्री का सेवन किया जा सकता है। ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको ग्रह से संबंधित दिन अर्थात वार को उपवास रखना चाहिए संबंधित ग्रह के देवी या देवता के मंदिर में पूजा अर्चा उपवास का एक अंग है। उपवास में क्रोध, द्वेष, इर्षा आदि से स्वयं को दूर रखें और ब्रम्हचर्यका पालन करें। मंगल को अनुकूल करने के लिए आपको रविवार में उपवास रखना चाहिए। आपको मंगल भगवान और शिव भगवान के मंदिर में दर्शन करना चाहिए तथा अपनी क्षमता के अनुसार दान करना चाहिए। पोंगल (सूर्य मेष राशी में भगवान का पूजन करना, देवियों को दही और गुड के साथ पकाए गए चावल को दान करना लाभदायक है। उपवास के समय मदिरापान, मांसाहारी पदार्थ और मादक चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। इन दिनों में प्राकृतिक खाद्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जिन पचाने के लिए सहायक हैं उपयोग करना चाहिए। अनाज, तले पदार्थ, गरम और खट्टे खाद्य पदार्थ टालने चाहिए। आप अंशत: या पूरी तरह अशुभ प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते हैं। उपवास के समय धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं हैं। आपका उपवास तभी सफल होगी जब आप अपने ऊपर संयम रखेंगे।

#### दान

स्वेच्छा से भिक्षा या दान देना अपने पापों के परिहार का श्रेष्ठ मार्ग है। मंगल ग्रह को अनुकूल करने के लिए लाल रंग का नर जानवर, लाल वस्त्र, सोना, ताँबा या ताबाँ से बनी मुर्ति दान देना लाभदायक है।

#### फूल

मंगल को अनुकूल करने के लिए आपको शिववन्ती, जपाकुसम, लाल कमल आदि फूलो को पहनना चाहिए। फूलो को अपने हाथ मे लेकर नीचे दिए गए मत्र का आलपन करे और फूलो को पहनना चाहिए।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम सुमम सन्दधे शिरस तेन मंगलो मे प्रसीदत्

#### पूजा

मंगल को अनुकूल करने के लिए कुछ पूजा विधियों का निर्देश किया है। आपको शिववन्ती, जपाकुसुम आदि फूलों से मंगल ग्रह का पूजन करना चाहिए। मंगल पूजा एक विशिष्ट पूजा हैं जो अच्छे परिणामों को उत्पन्न करती है। नवग्रहों के मंदिर में दर्शन करना,चम्पा फूल से मंगल ग्रह की पूजा करना और चम्पा फूल की माला मंगल ग्रह को अर्पण करना लाभदायक हैं। निपुण ज्योतिषियों के मार्गदर्शन के अनुसार ही पूजा विधि का पालन करना चाहिए। इस पूजा को तब करना अत्थधिक शुभ है जब मंगल मकर राशी में हो।

#### मन्त्रों का जाप

जो लोग अनुष्ठान यज्ञ आदि कर्म किसी कारणवश करने में असमर्थ हों वे निम्न मन्त्रों का पाठ कर बुध के दोष का परीहार कर सकते हैं।

ॐ भुमिपुत्राय विद्महे लोहितागाय धीमहि तन्नो: भौम : प्रचोदयात्

अत्यंत विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का जाप करने से ही आपको फल सिद्धी प्राप्त होगी।

मंगल को प्रसन्न करने के लिए मंगल के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है:

- ॐ महीसुताय नम : ॐ महाभागाय नम: ॐ मगलाय नम: ॐ मगलप्रदाय नम: ॐ महावीराय नम : ॐ महाशूराय नम: ॐ महाबलपराक्रमाय नम:
- ॐ महारौद्राय
- ॐ महाभद्राय नम:
- ॐ माननीयाय नम :
- ॐ दयाकराय नम:
- ॐ मानदाय नम:

#### यंत्र

कुजा यंत्र या भूपत्र यंत्र एक ऐसा यंत्र हैं जिसे आप शुक्र के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए पहन सकते हैं। यह यंत्र आपको शत्रुओं के खतरे से और ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों से दूर रखता हैं और आप को धनिक बनाता हैं।

#### अन्य यंत्र

जिनके जन्मकुंडली में मंगल ग्रह उच्च राशि में है उन्हें सुब्रमण्यम यंत्र पहनना लाभदायक हैं। चन्द्रग्रहण की रात में या पुष्य नक्षत्र के दिन से आप इसको इसके नियमानुसार पहन सकते हैं। यह यंत्र त्रिकालज्ञान, बीमारी से मुक्ति और धन-धान्य की समृधी प्रदान करता हैं। जिनके जन्मकुंडली में मंगल ग्रह युग्म राशि में हैं तो भद्रकालि यंत्र पहनना चाहिए। मंगल दशा में आपको अपने शत्रुओं के परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। भद्रकाली यंत्र पहनने से शत्रुओं के समस्याओं को दुर किया जा सकता है। इन यंत्रों का फल तब ही आपको प्राप्त होगी जब आप इसको उससे संबंधित नियमों के अनुसार एक निपुण ज्योतिषी द्वारा बनाया गया हो, और अत्यंत विश्वास और भक्ति के साथ पहना गया हो।

ऊपर दिए गए परिहार का 10-8-2034 तक आचारण करना चाहिए।

#### दशा :राहु

आपकी राहु दशा 10-8-2034 को शुरु होती है।

दशा के अधिपति का अशुभ योग है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

कुंडली की ग्रह स्तिथि के आधार पर इस ग्रह की दशा में आपको कुछ प्रतिकूल परिस्तिथियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी मानसिक स्थिरता प्रभावित होने से आप चिन्ता और डर से ग्रसित होंगे आपकी जीवन शैली पर इसका बुरा असर हो सकता है। राहु दशा के अशुभ प्रभावों की तीव्रता राहू के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती हैं। जब राहु प्रतिकूल है तो जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उनके बारे में यहाँ कहा गया हैं। जब राहु कमज़ोर हो तो आप मादक वस्तुओं की ओर आकर्षित होगें। अपनी योग्यता का पूरा उपयोग करने का अवसर आप गँवा सकते हैं। अच्छे लोगों से संपर्क में आने के अवसरों को आप खो देंगे, इस अवधि में आपके किसी विषाक्त चीज़ से बाधित होने की प्रबल संभावना हैं इस लिए आपको खानपान और यात्रा में अत्यधिक सचेत रहना होगा। इस समय आप समय के मूल्य की उपेक्षा कर सकते हैं। इस काल में आप बहुत अकेलापन महसूस करेंगे। स्वजनों की उपेक्षा और चर्मरोगों की प्रबल संभावना हैं आपकी वाक्शक्ति प्रभावित हो सकती हैं। अगर आप इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि राहु प्रतिकूल हैं। जो इस प्रकार की कठिनाइयों को महसूस कर रहे हैं उन्हें राहू को अनुकूल करने केलिए कुछ उपाय अपनाना चाहिए। राहू को अनुकूल रखने से आप उसके अशुभ प्रभावों को कम करने का प्रयत्न कर जीवन सुखद बना है। इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर राहु दशा में जिन विशिष्ट उपायों का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ उल्लेख किया गया है।

#### वस्त्र

काला और गहरे रंग का वस्त्र राहु को प्रिय है। इसलिए राहु को अनुकूल करने के लिए नागों की पूजा करते समय और मंदिर जाते समय काला वस्त्र पहनना चाहिए।

#### जीवन शैली

राहू की दशा में आपकी जीवनशैली राहू के स्वभाव के अनुरूप होनी चाहिए। राहु दशा मुख्य रुप से विचारशक्ति और चेतना को प्रभावित करती हैं। इसलिए ऐसे क्रियाकलापों से दूर रहना चाहिए जिनसे आपकी मानसिक स्थिरता प्रभावित हो। वैराग्य या दिवा स्वप्न को जीवन मे स्थान नहीं देना चाहिए और हमेशा किसी अच्छे काम में व्यस्त रहना चाहिए। जिन लोग मदिरापान, अनैतिक कार्य और व्यसन आदि से मानसिक अस्थिरता की संस्तुष्टि करे उनसे दूर रहना चाहिए। ऐसे काम में शामिल रहना जिनसे आपका आत्मविश्वास प्रभावित हो और मानसिक रुप से असतुष्ट लोगों से दूर रहना आपके लिए लाभदायक है। यदि आपके परिवार या वंश में कोई ऐसी जगह (जहाँ नागदेवता और काली माता की पूजा की जाती हैं) उसका संरक्षण करना चाहिए। अनावश्यक यात्रा और अप्राकृतिक खाद्यान्न से दूर रहना चाहिए। अपने समय को शान्तिपूर्ण वातावरण में बिताने की कोशिश करें।

#### उपवास

उपवास खाद्य पदार्थों के सेवन में किफायत के अतिरिक्त पचनसंस्थान को स्वस्थ रखने के उद्देश से तथा धार्मिक आस्था से किया जाने वाला लंघन हैं। इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। इसलिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए। ग्रहों के अनुकूलन के लिए किये जाने वाले उपवास में ठोस अन्न आदि खाद्य, मांसाहार, मदिरा सेवन, आदि निषिध मने गए हैं अतः इनके सेवन वर्जित हैं। उपवास के दिन सौम्य, सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। अधिक तीखे, चटपटे, खट्टे, तथा पचने में भरी खाद्य उपवास में वर्जित माने जाते हैं। फलाहार तथा कुछ हलकी खाद्य सामग्री का सेवन किया जा सकता है। ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको ग्रह से संबंधित दिन अर्थात वार को उपवास रखना चाहिए संबंधित ग्रह के देवी या देवता के मंदिर में पूजा अर्चा उपवास का एक अंग है। उपवास में क्रोध, द्वेष, इर्षा आदि से स्वयं को दूर रखें और ब्रम्हचर्यका पालन करें। उपवास का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए। क्योंकि राहु के लिए कोई शासन करने वाला दिवस नहीं हैं अपने जन्म नक्षत्र के दिन से नाग देव की पूजा करना और नाग राजा के मंदिर में दर्शन करना लाभदायक हैं। आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा नक्षत्र के दिन में और रविवार को उपवास रख सकते हैं। उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मादक करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं हैं। आपका उपवास तभी सफल होगी जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली से समय रखे।

#### दान

स्वेछा से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार और ग्रहों की शान्ति का का श्रेष्ठ मार्ग है। राहु को अनुकूल करने के लिए आप लोहा, पुष्पराग, गोड़ा, नीला वस्त्र, तिल, लोहा बर्तन में तिल का तेल आदि को दान दे सकते हैं।

#### फुल

राहु को शान्त करने के लिए आपको अपराजित नीला जपाकुसुम, आदि फुल पहनना चाहिए। फूलो को हाथ मे लेकर नीचे दिए गए मत्र का आलापन करने के बाद उसको पहनना चाहिए।

अनिष्टस्थानसंजातदोषनाश्करम् सुमम् सन्दधे शिरस तेन सर्पराज: प्रसीदतु ऊपर दिए गए परिहार का 9-8-2052 तक आचारण करना चाहिए।

#### दशा :गुरु

आपकी गुरु दशा 9-8-2052 को शुरु होती है।

आपका जन्म नक्षत्र अश्विनी है। गुरु आठवाँ भाव में है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

जन्मकुंडली की ग्रहस्थिति के आधार से गुरु दशा में प्रतिकूल स्थितियों से गुजरना पड़ेगा। गुरु यद्यपि समृद्धि प्रदान करने वाला ग्रह हैं फिर भी जब यह प्रतिकूल स्थिति में हो तो आपको अप्रत्याशित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य के विषय में बिलकुल भी लापरवाही ना करें। गुरु दशा के अशुभ प्रभावों की तीव्रता गुरु के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। गुरु के प्रतिकूल स्थान में होने से जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया है। जब गुरु कमज़ोर हो तो आपका ईश्वर से विश्वास भी कम हो जाएगा। दूसरों का काम जानबुझकर या अनजाने में आपको दुख पहुँचाएगा। इस समय आपको अपने क्रोध और संताप पर नियंत्रण रखना चाहिए। इस समय आपका आशावादी बने रहना कठिन होगा। निराशा, चिन्ता और आत्मविश्वास की कमी सफलता के मार्ग में रुकावट बन जाएगी। दोस्तों और रिश्तेदारों से बातचीत करते समय आपको स्वंय पर नियंत्रण करना चाहिए। इस समय आपको जीवन में उर्जा की कमी महसूस होगी। आपका अतिव्यय वित्तीय कठिनाइयों को उत्पन्न करेगा। आपको कोमल व्यवहार को बनाए रखना चाहिए। जब गुरु प्रतिकूल स्थान से हैं तो आपको स्वास्थ्य के प्रति विशेष रूप से मधुमेह,कफ, यकृत और गले से संबंधित व्याधियों के प्रति अधिक सचेत रहना होगा। आपका वजन कम हो सकता है। अगर आप इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि गुरु प्रतिकूल है। यहाँ निर्देशित उपायों को करने से आप गुरु के दुष्प्रभाव से मुक्ति पाकर सुखी हो सकते हैं। इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर गुरु के प्रतिकूल होने से इसकी शांति के लिए जिन उपायों को करना चाहिए उनका विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

#### वस्त्र

गुरु ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए। अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए आपको गुरुवार में पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए।

#### देव पूजा, आराधना, उपासना

गुरु ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको महाविष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिए। गुरुवार को व्रत रख कर विष्णु भगवान के मंदिर में दर्शन, जन्म नक्षत्र में विष्णु पूजा, गुरु दशा में शत्रूभय से बचने के लिए महासुदर्शन यज्ञ का अनुष्ठान करना, और चक्र पूजा करना आदि गुरु को शांत करने का मार्ग है।

#### प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातःकालीन प्रार्थना अशुभ प्रभावो को दूर करने के साथ - साथ आपके मन तथा शरीर को नयी उर्जा प्रदान करता है। चन्द्र दशा मे हमेशा सूर्योदय से पहले उठना चाहिए। अपने शरीर को शुध्द करने के बाद शनी की अनुग्रह की याचना करे। मन से सभी चिताओ से मुक्त कर एकाग्रता से प्रार्थना करनी चाहिए।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च नित्यम नमो भगवते गुरवे वराय पापनाशना लोकेश देवदेव नमोस्तुते साष्टांगनिष्ठ संभूतं दोषजताम् विनाश्येत देवानामादी देवश्च्य लोकेशं प्रभु वराय गुरोरनिष्टसंभूतम दोषजताम् विनाश्येत

इस प्रार्थना को हर दिन नीद से उठते ही शाथ्या मे पुरब की दिशा मे बैठकर आलापन करना चाहिए।

#### उपवास

उपवास खाद्य पदार्थ के उपयोग में किफायत करने के आचरण का ध्योतक है। उपवास रखना और व्रतादि अनुष्ठानों का पालन करने का सर्वोपिर लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए। गुरु को अनुकूल करने के लिए आपको गुरुवार को उपवास रखना चाहिए। इस समय विष्णु भगवान के मंदिर में दर्शन करना चाहिए और अपने योग्यता के अनुसार दान करना चाहिए। उपवास के समय मदिरापान, मासाहारी पदार्थ और मादक चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। इन दिनों में प्राकृतिक खाद्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जिन पचाने के लिए सहायक है। उनका उपयोग करना चाहिए। अनाज, तलेपदार्थ, गरम और खट्टे खाद्य पदार्थ टालने चाहिए। आप अंशत: या पूरी तरह अशुभ प्रभावों की तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते हैं। उपवास के समय धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं हैं। आपका

उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और विष्णु भगवन के मंदिर में जाना चाहिए। व्यवहार में संयम रखेंगे। गुरु की शान्ति हेतु आपको गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। स्वेच्छा से दान धर्म करें। भोजन की सात्विकता और पवित्रता का ध्यान रखें।

#### दान

स्वेच्छा से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार और ग्रहों की शान्ति का श्रेष्ठ मार्ग है। गुरु को अनुकूल करने के लिए दाल, पीला माणिक्य, हलदी, जूट, नींबू, सोना, नमक, शक्कर आदि को दान देना लाभदायक है।

#### फूल

गुरु ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको पीले पुष्प जैसे पीली शिखन्ती, पीला कचनर, पीला कनेर पहनना चाहिए। फूलो को अपने हाथ मे लेकर नीचे दिए गए मन्त्र का आलपन करने के बाद फूलो को पहनना चाहिए।

अनिष्टस्थानसजातदोषनाश्करम् सुमम् सन्दधे शिरस तेन देवपूज्या: प्रसीदतु

#### पूजा

गुरु को अनुकूल करने के लिए कुछ पूजा विधियों का नीर्देश है। आपको चमेली के फूल और अन्य पीले फूलों से गुरु का पूजा करनी चाहिए। नवग्रहों के क्षेत्र में दर्शन करना, गुरुवार को चमेली फूलों से गुरु की पूजा करना और चमेली की माला से आभूषित करना लाभदायक हैं। यह पूजा जन्म नक्षत्र के दिन में भी कि जा सकती है। निपुण ज्योतिषियों के मार्गदर्शन के अनुसार ही इस पूजा विधि का पालन करना चाहिए।

#### मन्त्रों का जाप

जो लोग अनुष्ठान यज्ञ आदि कर्म किसी कारणवश करने में असमर्थ हों वे निम्न मन्त्रों का पाठ कर गुरु के दोष का परीहार कर सकते हैं।

ॐ अगिरोजाताय विद्महे

वाचस्पतये धीमहि

तन्नो:नो गुरु: प्रचोदयात्

ॐ बृहस्पताय विद्महे

देवाचार्याय धीमहि

तन्नो: बृहस्पति: प्रचोदयात्

अत्यंत विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का जाप करने से ही आपको फल सिद्धी प्राप्त होगी।

गुरु को प्रसन्न करने के लिए गुरु के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है

- ॐ श्रीगुरवे नम :
- ॐ गुणकराय नम:
- ॐ गोप्त्रे नम:
- ॐ गोचराय नम:
- ॐ गुरुणाम् गुरुवे नम:
- ॐ अगीरसाय नम:
- ॐ जेत्रे नम:
- ॐ जयन्ताय नम:
- ॐ जयदाय नम:

#### अंगुलिक यंत्र

अगुंलिक यंत्र ग्रहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय हैं। बुध को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यन्त्र नीचे प्रस्तुत किया गया हैं-

10	5	12
11	9	7
6	13	8

इस यन्त्र को विशुध्द मन से पहनने से अशुभ प्रभावों का दूर किया जा सकता है और यह आपके मन को एक नई उर्जा प्रदान करता हैं। यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं तो आप इसको एक कागज़ के तुकड़े पर लिखकर अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबल

पर रखना चाहिए।

ऊपर दिए गए परिहार का 9-8-2068 तक आचारण करना चाहिए।

# दशा और भुक्ती का विवरण काल ( साल = 365.25 दिन )

जन्म के समय दशा का भोग्य काल = केतु 1 साल, 2 मास, 18 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्त्य
केतू	शनि	22-05-1990	13-08-1990
केतू	बुध	13-08-1990	10-08-1991
शुक्र	शुक्र	10-08-1991	09-12-1994
शुक्र	सूर्य	09-12-1994	10-12-1995
शुक्र	चन्द्र	10-12-1995	09-08-1997
शुक्र	मंगल	09-08-1997	10-10-1998
शुक्र	राहू	10-10-1998	09-10-2001
शुक्र	गुरु	09-10-2001	09-06-2004
शुक्र	शनि	09-06-2004	10-08-2007
शुक्र	बुध	10-08-2007	10-06-2010
शुक्र	केतू	10-06-2010	10-08-2011
सूर्य	सूर्य	10-08-2011	28-11-2011
सूर्य	चन्द्र	28-11-2011	28-05-2012
सूर्य	मंगल	28-05-2012	03-10-2012
सूर्य	राहू	03-10-2012	28-08-2013
सूर्य	गुरु	28-08-2013	16-06-2014
सूर्य	शनि	16-06-2014	29-05-2015
सूर्य	बुध	29-05-2015	03-04-2016
सूर्य	केतू	03-04-2016	09-08-2016
सूर्य	शुक्र	09-08-2016	09-08-2017
चन्द्र	चन्द्र	09-08-2017	10-06-2018
चन्द्र	मंगल	10-06-2018	09-01-2019
चन्द्र	राहू	09-01-2019	10-07-2020
चन्द्र	गुरु	10-07-2020	09-11-2021
चन्द्र	शनि	09-11-2021	10-06-2023

चन्द्र	बुध	10-06-2023	09-11-2024
चन्द्र	केतू	09-11-2024	10-06-2025
चन्द्र	शुक्र	10-06-2025	08-02-2027
चन्द्र	सूर्य	08-02-2027	10-08-2027
मंगल	मंगल	10-08-2027	06-01-2028
मंगल	राहू	06-01-2028	24-01-2029
मंगल	गुरु	24-01-2029	30-12-2029
मंगल	शनि	30-12-2029	08-02-2031
मंगल	बुध	08-02-2031	06-02-2032
मंगल	केतू	06-02-2032	04-07-2032
मंगल	शुक्र	04-07-2032	03-09-2033
मंगल	सूर्य	03-09-2033	09-01-2034
मंगल	चन्द्र	09-01-2034	10-08-2034
राहू	राहू	10-08-2034	22-04-2037
राहू	गुरु	22-04-2037	15-09-2039
राहू	शनि	15-09-2039	22-07-2042
राहू	बुध	22-07-2042	08-02-2045
राहू	केतू	08-02-2045	26-02-2046
राहू	शुक्र	26-02-2046	26-02-2049
राहू	सूर्य	26-02-2049	21-01-2050
राहू	चन्द्र	21-01-2050	23-07-2051
राहू	मंगल	23-07-2051	09-08-2052
गुरु	गुरु	09-08-2052	27-09-2054
गुरु	शनि	27-09-2054	10-04-2057
गुरु	बुध	10-04-2057	17-07-2059
गुरु	केत्	17-07-2059	21-06-2060
गुरु	शुक्र	21-06-2060	20-02-2063
गुरु	सूर्य	20-02-2063	10-12-2063
गुरु	चन्द्र	10-12-2063	10-04-2065
गुरु	मंगल	10-04-2065	17-03-2066

गुरु	राहू	17-03-2066	09-08-2068
शनि	शनि	09-08-2068	13-08-2071
शनि	बुध	13-08-2071	22-04-2074
शनि	केतू	22-04-2074	01-06-2075
शनि	शुक्र	01-06-2075	01-08-2078
शनि	सूर्य	01-08-2078	14-07-2079
शनि	चन्द्र	14-07-2079	11-02-2081
शनि	मंगल	11-02-2081	23-03-2082
शनि	राहू	23-03-2082	27-01-2085
शनि	गुरु	27-01-2085	10-08-2087

नीचे खिंची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

•			
प्रत्य	तर	दश	T

7\7	(1 × 4 × 11)		
दशा :	चंद्र अपहार : गुरु		
1.गु	10-07-2020 >> 13-09-2020	2.श	13-09-2020 >> 29-11-2020
3.बु	29-11-2020 >> 06-02-2021	4.के	06-02-2021 >> 06-03-2021
5.शु	06-03-2021 >> 26-05-2021	6.र	26-05-2021 >> 20-06-2021
7.चं	20-06-2021 >> 30-07-2021	8.मं	30-07-2021 >> 28-08-2021
9.रा	28-08-2021 >> 09-11-2021		
दशा :	चंद्र अपहार : शनी		
1.श	09-11-2021 >> 08-02-2022	2.बु	08-02-2022 >> 01-05-2022
3.के	01-05-2022 >> 04-06-2022	4.शु	04-06-2022 >> 08-09-2022
<b>5</b> .र	08-09-2022 >> 07-10-2022	6.चं	07-10-2022 >> 24-11-2022
7.मं	24-11-2022 >> 28-12-2022	8.रा	28-12-2022 >> 25-03-2023
9.गु	25-03-2023 >> 10-06-2023		
दशा :	चंद्र अपहार : बुध		
1.बु	10-06-2023 >> 22-08-2023	2.के	22-08-2023 >> 22-09-2023
3.शु	22-09-2023 >> 17-12-2023	<b>4.</b> र	17-12-2023 >> 12-01-2024
5.चं	12-01-2024 >> 24-02-2024	6.मं	24-02-2024 >> 25-03-2024
7.रा	25-03-2024 >> 11-06-2024	8.गु	11-06-2024 >> 19-08-2024
9.श	19-08-2024 >> 09-11-2024		
दशा :	चंद्र अपहार : केतु		
1.के	09-11-2024 >> 21-11-2024	2.शु	21-11-2024 >> 26-12-2024
<b>3.</b> र	26-12-2024 >> 06-01-2025	4.चं	06-01-2025 >> 24-01-2025
5.मं	24-01-2025 >> 05-02-2025	6.रा	05-02-2025 >> 09-03-2025
7.गु	09-03-2025 >> 07-04-2025	8.श	07-04-2025 >> 10-05-2025
9.बु	10-05-2025 >> 10-06-2025		
दशा :	चंद्र अपहार : शुक्र		
1.शु	10-06-2025 >> 19-09-2025	2.₹	19-09-2025 >> 19-10-2025
3.चं	19-10-2025 >> 09-12-2025	4.मं	09-12-2025 >> 14-01-2026
5.रा	14-01-2026 >> 15-04-2026	6.गु	15-04-2026 >> 05-07-2026
7.श	05-07-2026 >> 10-10-2026	8.बु	10-10-2026 >> 04-01-2027
9.के	04-01-2027 >> 08-02-2027		

दशा :	चंद्र अपहार : सूर्य		
1.र	08-02-2027 >> 17-02-2027	2.चं	17-02-2027 >> 05-03-2027
3.मं	05-03-2027 >> 15-03-2027	4.रा	15-03-2027 >> 12-04-2027
5.गु	12-04-2027 >> 06-05-2027	6.श	06-05-2027 >> 04-06-2027
7.बु	04-06-2027 >> 30-06-2027	8.के	30-06-2027 >> 11-07-2027
9.शु	11-07-2027 >> 10-08-2027		
दशा :	मंगल अपहार : मंगल		
1.मं	10-08-2027 >> 19-08-2027	2.रा	19-08-2027 >> 10-09-2027
3.गु	10-09-2027 >> 30-09-2027	4.श	30-09-2027 >> 24-10-2027
5.बु	24-10-2027 >> 14-11-2027	6.के	14-11-2027 >> 22-11-2027
7.शु	22-11-2027 >> 17-12-2027	8.र	17-12-2027 >> 25-12-2027
9.चं	25-12-2027 >> 06-01-2028		
दशा :	मंगल अपहार : राहु		
1.रा	06-01-2028 >> 04-03-2028	2.गु	04-03-2028 >> 24-04-2028
3.₹	24-04-2028 >> 23-06-2028	4.बु	23-06-2028 >> 17-08-2028
5.के	17-08-2028 >> 08-09-2028	6.शु	08-09-2028 >> 11-11-2028
7.र	11-11-2028 >> 30-11-2028	8.चं	30-11-2028 >> 01-01-2029
9.मं	01-01-2029 >> 24-01-2029		
दशा :	मंगल अपहार : गुरु		
1.गु	24-01-2029 >> 10-03-2029	2.श	10-03-2029 >> 03-05-2029
3.बु	03-05-2029 >> 20-06-2029	4.के	20-06-2029 >> 10-07-2029
5.शु	10-07-2029 >> 05-09-2029	6.र	05-09-2029 >> 22-09-2029
7.चं	22-09-2029 >> 20-10-2029	8.मं	20-10-2029 >> 09-11-2029
9.रा	09-11-2029 >> 30-12-2029		
दशा :	मंगल अपहार : शनी		
1.श	30-12-2029 >> 05-03-2030	2.बु	05-03-2030 >> 01-05-2030
3.के	01-05-2030 >> 25-05-2030	4.शु	25-05-2030 >> 31-07-2030
5.र	31-07-2030 >> 20-08-2030	6.चं	20-08-2030 >> 23-09-2030
7.मं	23-09-2030 >> 17-10-2030	8.रा	17-10-2030 >> 16-12-2030
9.गु	16-12-2030 >> 08-02-2031		

दशा :	मंगल अपहार : बुध			
1.बु	08-02-2031 >> 01-04-2031	2.के	01-04-2031 >> 22-04-2031	
3.श्	22-04-2031 >> 21-06-2031	4.₹	21-06-2031 >> 09-07-2031	
5.चं	09-07-2031 >> 08-08-2031	6.मं	08-08-2031 >> 30-08-2031	
7.रा	30-08-2031 >> 23-10-2031	8.गु	23-10-2031 >> 10-12-2031	
9.श	10-12-2031 >> 06-02-2032			
दशा :	मंगल अपहार : केतु			
1.के	06-02-2032 >> 14-02-2032	2.शु	14-02-2032 >> 10-03-2032	
3.र	10-03-2032 >> 18-03-2032	4.चं	18-03-2032 >> 30-03-2032	
5.मं	30-03-2032 >> 08-04-2032	6.रा	08-04-2032 >> 30-04-2032	
7.गु	30-04-2032 >> 20-05-2032	8.श	20-05-2032 >> 13-06-2032	
9.बु	13-06-2032 >> 04-07-2032			
दशा :	मंगल अपहार : शुक्र			
1.शु	04-07-2032 >> 13-09-2032	2.र	13-09-2032 >> 04-10-2032	
3.चं	04-10-2032 >> 09-11-2032	4.मं	09-11-2032 >> 03-12-2032	
5.रा	03-12-2032 >> 05-02-2033	6.गु	05-02-2033 >> 03-04-2033	
7.श	03-04-2033 >> 10-06-2033	8.ৰু	10-06-2033 >> 09-08-2033	
9.के	09-08-2033 >> 03-09-2033			
दशा :	मंगल अपहार : सूर्य			
1.र	03-09-2033 >> 09-09-2033	2.चं	09-09-2033 >> 20-09-2033	
3.मं	20-09-2033 >> 27-09-2033	4.रा	27-09-2033 >> 16-10-2033	
5.गु	16-10-2033 >> 03-11-2033	6.श	03-11-2033 >> 23-11-2033	
7.बु	23-11-2033 >> 11-12-2033	8.के	11-12-2033 >> 18-12-2033	
9.शु	18-12-2033 >> 09-01-2034			
दशा :	मंगल अपहार : चंद्र			
1.चं	09-01-2034 >> 26-01-2034	2.मं	26-01-2034 >> 08-02-2034	
3.रा	08-02-2034 >> 12-03-2034	4.गु	12-03-2034 >> 09-04-2034	
5.श	09-04-2034 >> 13-05-2034	6.बु	13-05-2034 >> 12-06-2034	
7.के	12-06-2034 >> 25-06-2034	8.शु	25-06-2034 >> 30-07-2034	
9.र	30-07-2034 >> 10-08-2034			

दशा :	राहु अपहार : राहु		
1.रा	10-08-2034 >> 05-01-2035	2.गु	05-01-2035 >> 16-05-2035
3.श	16-05-2035 >> 19-10-2035	4.बु	19-10-2035 >> 07-03-2036
5.के	07-03-2036 >> 03-05-2036	6.शु	03-05-2036 >> 15-10-2036
<b>7.</b> र	15-10-2036 >> 03-12-2036	8.चं	03-12-2036 >> 23-02-2037
9.मं	23-02-2037 >> 22-04-2037		
दशा :	राहु अपहार : गुरु		
1.गु	22-04-2037 >> 17-08-2037	2.₹⊺	17-08-2037 >> 03-01-2038
3.बु	03-01-2038 >> 07-05-2038	4.के	07-05-2038 >> 27-06-2038
5.शु	27-06-2038 >> 20-11-2038	6.र	20-11-2038 >> 03-01-2039
7.चं	03-01-2039 >> 17-03-2039	8.मं	17-03-2039 >> 07-05-2039
9.रा	07-05-2039 >> 15-09-2039		
दशा :	राहु अपहार : शनी		
1.श	15-09-2039 >> 27-02-2040	2.बु	27-02-2040 >> 24-07-2040
3.के	24-07-2040 >> 22-09-2040	4.शु	22-09-2040 >> 15-03-2041
5.र	15-03-2041 >> 06-05-2041	6.चं	06-05-2041 >> 01-08-2041
7.मं	01-08-2041 >> 30-09-2041	8.रा	30-09-2041 >> 06-03-2042
9.गु	06-03-2042 >> 22-07-2042		
दशा :	राहु अपहार : बुध		
1.बु	22-07-2042 >> 01-12-2042	2.के	01-12-2042 >> 25-01-2043
3.श्	25-01-2043 >> 29-06-2043	<b>4.</b> र	29-06-2043 >> 15-08-2043
5.चं	15-08-2043 >> 31-10-2043	6.मं	31-10-2043 >> 24-12-2043
7.रा	24-12-2043 >> 12-05-2044	8.गु	12-05-2044 >> 13-09-2044
9.श	13-09-2044 >> 08-02-2045		
दशा :	राहु अपहार : केतु		
1.के	08-02-2045 >> 02-03-2045	2.शु	02-03-2045 >> 05-05-2045
3.र	05-05-2045 >> 24-05-2045	4.चं	24-05-2045 >> 25-06-2045
5.मं	25-06-2045 >> 18-07-2045	6.रा	18-07-2045 >> 13-09-2045
7.गु	13-09-2045 >> 03-11-2045	8.श	03-11-2045 >> 03-01-2046
9.बु	03-01-2046 >> 26-02-2046		

## कुंडली में ग्रहों की विशिष्ट युति योग

जन्म कुंडली में ग्रहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होने वाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भिवष्य को असर करने वाला होता हैं। कुछ योग ग्रहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं, लेकिन विशेष दूसरे योग जो हैं वह ग्रहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान ग्रहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती हैं। आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण ग्रहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहां दिया गया हैं।

#### अनभा योग

लक्षण: सूर्य के अतिरिक्त कोई भी ग्रह चन्द्र से बारहवे स्थान पर हो।

चन्द्र लग्न से बारहवीं राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पित, शुक्र या शिन अकेले या एक साथ स्थित रहने पर अनभा योग बनता हैं। अनभा योग स्त्री जातक और उसके पित को श्रीमंत और सुखी बनाता हैं। भौतिक संपत्तियों से तथा लौकिक प्रतिष्ठाओं के साथ आपका चिरत्र सुशोभित रहेगा। आपको अच्छे कपड़े, आभूषण और नये पिरधान अच्छे लगते हैं। अपनी दानशीलता तथा दयाशीलता से आप एक कुशल गृहिणी कहलायेंगी। धनी होते हुए भी आप व्यवहार में अहंकार और चंचल स्वभाव से मुक्त रहेंगी। स्वभाव में विनम्रभाव प्रकट हो उठेगा। योग्य शारीरिक सौन्दर्य, शांत गंभीर मुखमुद्रा इन योग वालों के लक्षण हैं। आपका करुणापूर्ण व्यवहार और विनय आप को कीर्ति प्रदान करेंगे।

#### द्विग्रह योग

लक्षण: दो ग्रह एक ही भाव में स्थीत है। चंद्र,बुध, छठ्ठा भाव में है।

आपमें मजबूत और सफल वैवाहिक जीवन बिताने की योग्यता है। आपके मन में हमेशा दया और भक्ति का दिया जलता रहेगा। अपने रोचक व्यवहार और आकर्षक बातचीत से आप दूसरों का प्यार और आदर प्राप्त करेंगे।

## अस्तंगत ग्रह स्थिती का विवरण।

जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आता है तब वह अस्त हो जाता है। अस्त ग्रह अशुभ स्थिती उत्पन्न करता है। इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रह अस्त नहीं है।

#### ग्रहयुद्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्य ग्रह जब भी एक अंश से ज्यादा समीप आते हैं तो 'ग्रहयुद्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुद्ध में शुभाशुभ के बारे में अलग-अलग विचार धारायें हैं। उसकी एक झलक इस प्रकार है। अन्य ग्रहों के लिए : उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजयी होते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुद्ध नहीं है।

#### अवस्था, क्षीण, अस्त, युद्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

ग्रह	उच्च राशि में / नीच राशि में	अन्स्तंगत	ग्रहयुद्ध	वक्री	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र					वृद्धावस्था
बु					युवावस्था
शु	उच्च का				बालावस्था
मं					मित्रावस्था
गु					युवावस्था
श				वक्री	मित्रावस्था

## अष्टकवर्ग फलादेश

#### अष्टकवर्ग

अष्टकवर्ग पद्धित भारतीय ज्योतिष की भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से संबंधित अंको के प्रयोग का उपयोग करती है। अष्टकवर्ग का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण। यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों के अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है। गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गया है। एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे संबंधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है। हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिए जाते है। गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	शुभाशुभ
मेष	5 <b>*</b>	3	6 <b>*</b>	6	3	4	3	30
वृषभ	3	2*	4	3	2	6	3	23
मिथुन	6	3	3	5	2	3*	4	26
कर्क	4	1	3	4	2	5	1	20
सिंह	2	6	4	3	5	7	3	30
कन्या	4	6	6	3	6	4	3	32
तुला	4	4	4	4	3	1	1	21
वृश्चिक	5	4	6	4	4	4	6	33
धनु	4	3	3	6	1	8	3	28
मकर	5	5	6	4	3	4	4*	31
कुंभ	3	8	5	4	5*	5	5	35
मीन	4	3	4	6 <b>*</b>	3	5	3	28
	49	48	54	52	39	56	39	337

\*ग्रहों की स्थिति

लग्न वृश्चिक में है।

#### चन्द्र का अष्टकवर्ग

ऐसे कुछ ही लोग अनुग्रहित होगें जो नैतिकतत्व सत्य को धैर्य से प्रकाशित करें। जन्मकुण्डली के चन्द्र अष्टकवर्ग में उपस्थित पाँच बिंदु आपके नैतिकतत्व को ऊँचा करने का धैर्य प्रदान करेंगे। यह आपको व्यक्त अन्तरात्मा प्रदान करेंगे और आप अपने आप शान्त होगें।

#### सूर्य का अष्टकवर्ग

सूर्य के अष्टकवर्ग में सिर्फ एक ही बिंदु है। यह सूचित करता है कि आपके जीवन में ऐसी परिस्थिति होगी जो बिना किसी मुख्य लक्ष्य के न हो। आपको अनेक कष्टो और स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। गृहों के चेतावनी को मन में रखकर बुरे समय और परिस्थितियों की तीव्रता को कम करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

#### बुध गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के बुध अष्टकवर्ग में छ: बिंदु है। यह आपको हर क्षेत्र में सफलता प्रदान करते है। औद्योगिक विषय और परियोजनओं में कोई रुकावट और मुसीबत नहीं होगी।

#### शुक्र का अष्टकवर्ग

आपमें ऐसा कुछ है जो विविध प्रकार के अद्भुत लोगों के संयोग को आकर्षित करता है। वह तत्व आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टकवर्ग में उपस्थित छ: बिंदुओं के कारण है। अपने आकर्षण को सही रुप से सभाँलने पर यह आपके लिए उचित और अनुकूल होगा।

#### मंगल गृह का अष्टकवर्ग

मंगल के अष्टकवर्ग में उपस्थित पाँच बिंदु आपके आकषर्णीय और रोचक व्यवहार को सूचित करता है। आप हमेशा कोमल और अच्छे व्यवहार के होंगे और दूसरे लोग इसके लिए आपको अभिनन्दित करेंगे। आप रिश्तेदारों और मित्रों के बीच प्रसिद्व हो जायेंगे। ऐसी कोई भी परिस्थिति नहीं होगी जिससे लोग आपके व्यवहार को बुरा कहेंगे।

#### गुरु का अष्टकवर्ग

आपके कोमल कान आपके जन्मकुण्डली के गुरु अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिंदुओं से प्रभावित होंगे। यह आपके आलस्य का कारण बन जाएगा। पोषण युक्त भोजन खाने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए।

#### शनी गृह का अष्टकवर्ग

शनि के अष्टकवर्ग में चार बिंदु है । यह दूसरों से खुशी को सूचित करते है। अपने परिवार रिश्तेदारों और दोस्तो से आपको खुशी और सहायता प्राप्त होगी।

#### सर्वाष्टकवर्ग फलादेश

आपके जन्मकुण्डली में लग्न, चन्द्र चिन्ह, दसवें और ग्यारहवें भाव में तीस और उससे ज्यादा बिंदु है और चन्द्र गुरु से संयोग में है। आपको शक्ति और प्रभाव को नियंत्रण करने का अवसर मिलेगा। आपका ग्रह स्थान यह सूचित करता है आप एक विभाग के लोगों के मार्गदर्शक बनेंगे। आप राजनीतिक क्षेत्र, समाजिक प्रश्नों के योद्धा या अपने क्षेत्र या समुदाय के मार्गदर्शक बन सकते है। आपके नक्षत्र का अच्छा प्रभाव आपको उच्च पद जैसे मंत्री या व्यवस्थापक का स्थान प्राप्त करने का भाग्य प्रदान करता है।

आपके जन्मकुण्डली में तीस से ज्यादा बिंदु है और नवम, दसवें और छठे अधिपति से संबंधीत है। आप परिवारिक मूल्यों और सदाचारों के निदेर्शनात्मक गुणों से अनुग्रहित होगें जो आपको अपने परिवार का मार्गदर्शक और विश्वसनीय बनाएगा। निर्णयों और मार्गदर्शन का सम्मान के साथ अनुसरण करिए और आप पीढी के लिए संकेत दीप बनेंगे।

आपके जन्मकुण्डली के ग्यारहवें भाव में दसवें भाव से ज्यादा बिंदु है, लेकिन बारहवें भाव में ग्यारहवें भाव से कम बिंदु है और उदीयमान में उपस्थित बिंदु ग्यारहवी से भी महत्व है। अगर आप चाहे तो भी सम्पत्ति और प्रसिद्धि से दूर नहीं भाग सकते जो किसी ओर के ऊपर घटित है जिनके ग्रहों का प्रभाव आपके जैसे हो। आपकी समृद्धि और प्रसिद्धि जीवन में खुशी के लिए रुकावट नहीं होगी। जरुर ही आपका जीवन एक अनुग्रहित जीवन होगा।

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिंदु वृश्चिक राशी से कुंभ राशी तक है। प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होंगे। ग्रहों का षड्यंत्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिंचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा।

छठे, और ग्यारहवें भाव में तीस से ज्यादा बिंदु है। चालिस की उम्र के बाद आपका जीवन का मार्गशील होगा। आपका आकर्षक व्यक्तित्व दूसरे लोगों को आपके ओर खिंच लेगा और यह आपके व्यक्तिगत लक्ष्यों के लिए सहायक होगा। सम्पत्ति और भाग्य आपके ऊपर उदारता से बरसेंगे।

गुरु, शुक्र, बुध द्वारा धारण किए राशियों में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा। आपकी शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगी और आपको ऊँचे पढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा। यह आपको उद्योग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्धि की ओर ले जाएगा। व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा। आपका सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा। यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा।

आपके लिए यह विशिष्ट समय 26, 28 और 30 उम्र में होगा।

#### गोचर फल

नाम	: Mamta Rawat (स्त्री)
जन्म राशी	:मेष
जन्म नक्षत्र	: अश्विनी
ग्रहस्थिती	: 7-नवम्बर-2020
अयनांश	: चैत्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान में उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिकता रखने की क्षमता रखते हैं।

#### सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जो फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया गया है।

🌞 ( 16-अक्तूबर-2020 >> 15-नवम्बर-2020 )

इस समय सूर्य सातवाँ भाव से संचार करेगा।

जब कभी किसी कार्य का आयोजन होता है तो आप बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से उसका अवलोकन करनेवाली स्त्री हैं। हरएक प्रकार से सावधान रहनेवाली युवती हैं। यह होते हुए भी एक बात तो स्पष्ट हैं कि हर नारी के कार्य करने की सीमा रेखा होती है। सामाजिक नियमों के आधीन रहकर ही स्त्रियों के लिए कार्य करना होता है। यह बात स्मृति में रहे तो अच्छा होगा। प्रारब्ध प्रेरित आर्थिक स्थिति शांत चित्त से निभा लेने में ही अकलमंदी मानी जायेगी। स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहना अनुचित माना जायेगा। स्वास्थ्य के प्रति बनी लापरवाही भविष्य में महँगी पड़ेगी। वर्तमान परिस्थिति और उम्र का ख्याल होना अनिवार्य है। विश्राम और विनोदकार्य के लिए थोड़े कम समय का उपभोग किया जाये तो अच्छा रहेगा। अन्यथा भविष्य में पछताना होगा। बाढ़ के आने के पहले ही बाँध बनाने में अकलमंदी रही है। यात्रा का संयोग आ सकता है।

🌞 ( 15-नवम्बर-2020 >> 15-दिसम्बर-2020 )

इस समय सूर्य आठवाँ भाव से संचार करेगा।

भूतकाल से ही जीवन में धैर्य से आगे बढ़ने की आप आदी हैं। लेकिन अब अकारण ही मन ही मन भयग्रस्त हो गयी हैं। अभिमुख होनेवाली समस्याओं का सामना करना ही पुरुषार्थ है। भूतकाल में उपलब्ध धैर्य और शौर्य के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। आप स्वास्थ्य और आहार के संबंध में लापरवाह रहने वाली हैं। इस निमित्त भविष्य में पछताना होगा। आप निर्दोष युवती होते हुए भी आक्षेप की पात्र बनेंगी। निस्वार्थ स्थिति में आपने जिससे अपेक्षाकृत मदद की भावना रखी थी उनसे ही आरोपित होना पड़ेगा। इस कारण मन चिड़चिड़ा रहेगा। बार-बार क्रोधित होना पड़ेगा। यह शारीरिक और मानसिक कमज़ोरी ही इसका कारण बन सकती है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

🌞 ( 15-दिसम्बर-2020 >> 14-जनवरी-2021 )

इस समय सूर्य नवम भाव से संचार करेगा।

धारणानुसार आपके कार्य गितशील नहीं बनेंगे। इस कारण मन निराश होगा। जिन लोगों से आत्मीयता की अपेक्षा रखती हो वे लोगों ही मन दुखायेंगे। इस प्रकार के बर्ताव से कोई भी युवती दुःखी हो सकती है। पापयुक्त कर्मों के प्रति और अयोग्य कार्यों के प्रति मन आकर्षित होगा। स्वयंपापी हो ऐसा भी भ्रम जाग्रत होगा। चिंतन और भावुक मन को लगाम देना अनिवार्य है। उनके बेकाबू होने से दुर्भाग्य संजोग के लिए स्वयं ही ज़िम्मेवार कहलायी जायेगी। हर विपरीत स्थिति का सामना करने में आप समर्थ नारी हैं। यह सत्य क्रमश: अपने आप जान जायेगी।

#### गुरु का गोचर फल।

हर राशि में गुरु एक साल तक रहता है। गुरु के कारण अति महत्वपूर्ण अनुभव होते रहते हैं। आपकी चन्द्र राशि में वर्तमान में वह क्या फल देगा, यह नीचे दर्शाया जा रहा है।

🌋 ( 1-जुलाई-2020 >> 20-नवम्बर-2020 )

इस समय गुरु नवम भाव से संचार करेगा।

ईश्वरकृपा को लेकर समय में सुधार का अनुभव हो रहा है। मन शांति का अनुभव करनेवाला है। आपके कार्यक्षेत्र में अवरोध उत्पन्न करनेवाले व्यक्ति क्रमश: आपके रास्ते से हट जायेंगे। आपकी सहकर्मी महिलायें आपके प्रति वफादारी निभानेवाली होंगी। सुख और दु:ख के समय समान प्रकार से वह आपका साथ देंगी। इस कारण मन आनन्दित रहेगा। पित या हितैषी से अनुकंपा और प्रेम दोनों सुलभता से प्राप्त होंगे। आपके जीवनसाथी से सुखपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा की जा सकती है। आपके पित अथवा संतान किसी विशेष प्रकार के सम्मान प्राप्त करनेवाले हैं। आप भी सम्मान और बहुमान के पात्र बनेगी। भाग्योदय के लिए अनुकूल समय है।

**\*** ( 21-नवम्बर-2020 >> 6-अप्रैल-2021 )

इस समय गुरु दशम भाव से संचार करेगा।

आपके सन्मुख विरोध प्रकट करने में और विघ्नों के सर्जन में कोई कमी नहीं रहनेवाली। ऐसे होते हुए भी आप निराश होनेवाली युवती नहीं है। यह आपके धैर्यशील व्यवहार से ही प्रकट होता है। आपका मनोबल और धैर्यशील कार्य करने की प्रणाली अन्य स्त्री के लिए उदाहरण स्वरूप बनेगा। सफलता की चोटी पर पहुँचना हो तो अतिपरिश्रम करना अनिवार्य बन पड़ता है। ह्रस्व मार्ग से सफलता मिलती नहीं और वह अर्थशून्य कार्य ही बन पड़ता है। यह सत्य धीरे-धीरे अपने आप समझ पायेंगी। आपका अनुभवज्ञान और उपदेश अन्य स्त्री के लिए लाभदायी हो सकता है। क्षमा का अभाव उत्पन्न होगा। कुछ प्रयास और कार्यकुशलता के माध्यम से लाभ हो सकता है। सरकार व्यवसाय या पिता की ओर से थोड़ी चिन्ता हो सकती है।

#### शनि का गोचर फल।

साधारण स्थिति में शनि का गोचर संचार शुभ नहीं होता। शनि के प्रभाव के कारण निराश होना पड़ता है और मन उद्वेग से भर उठता है। फिर भी अनुकूल ग्रह योग स्थिति में अप्रतिक्षित लाभ भी दिलानेवाला होता है। हर राशि में शनि दो वर्ष और छे: महीने तक स्थान ग्रहण करता है।

🌋 ( 25-जनवरी-2020 >> 29-अप्रैल-2022 )

इस समय शनि दशम भाव से संचार करेगा।

हर मार्ग से सफलता को प्राप्त करने की कोशिश जारी रहेगी। आप में शौर्य का जागरण होगा जो एक स्त्री के लिए शोभनीय नहीं रहेगा। व्यर्थ के मतभेद को लेकर पित के साथ कलह होगा। पिरवार के बीच भी कलह होगा। मानसिक सन्तुलन बनाये रखना असंभव होगा। सोचे समझे बिना हर कार्य में कूद पड़ने की संभावना दिखती हैं। पिरवार की बदनामी न हो इस बात का ध्यान रखें तो फिर कुछ या प्राप्त होगा और सम्मानित होंगी। अभ्यास क्षेत्र में प्रगित प्राप्त करना किठन होगा। साहित्य कार्य में (लेखन इत्यादि) कमी का अनुभव होगा। अबुरे कण्टक शिन के किठन गोचर से गुज़र रही हैं।

🌞 ( 30-अप्रैल-2022 >> 12-जुलाई-2022 )

इस समय शनि ग्यारहवां भाव से संचार करेगा।

आप स्वयं भाग्यवान हैं ऐसा भ्रम होगा। परिवार के बीच और बाहरी क्षेत्र में एक समर्थ स्त्री कहलायेंगी। इस कारण सभी लोगों से बहुमानित होगी। धन-संपत्ति में कोई कमी नहीं रहेगी। धारणा के युक्त काम आगे नहीं बढ़ेंगे। उल्टे गित में कमी का अनुभव होगा। कुछ समय के बाद आप गितशील बनेंगी। बच्चे संतोष का अनुभव करेंगे। जो कार्य अनेक बाधाओं से रुके पड़े थे वे गितमान होंगे और इस कारण स्वस्थता का अनुभव होगा। श्रेष्ठ और उच्चतर कार्यालयों से अनुमोदनीय बुलावे प्राप्त होंगे। मान्यता भी प्राप्त होगी। पित के साथ उल्हासमय, रस भरपूर जीवन बिताने की स्वर्ण अवसर प्राप्त होगा। लाभ के स्रोतों में वृद्धि की आशा कर सकती हैं।

### नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी कोष्टक

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	ज्येष्ठा	बुध	गुरु	सूर्य
चंद्र	अश्विनी	केतु	शनी	राहु
सूर्य	कृत्तिका	सूर्य	केतु	गुरु
बुध	भरनी	शुक्र	शुक्र	बुध
शुक्र	रेवती	बुध	गुरु	शुक्र
मंगल	पूर्वाभाद्रपदा	गुरु	चंद्र	गुरु
गुरु	आर्द्रा	राहु	शुक्र	बुध
शनी	उत्तराषाढा	सूर्य	गुरु	गुरु
राहु	श्रवण	चंद्र	शनी	राहु
केतु	आश्लेषा	बुध	बुध	शुक्र
गुलिक	ज्येष्ठा	बुध	बुध	केतु

## निरयन सारिणी संक्षिप्त ( अंश. मिनिट (कला). सेकेन्ड (विकला). )

ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	वृश्चिक	27:17:58	ज्येष्ठा / 4	गुरु	मिथुन	17:11:45	आर्द्रा / 4
चंद्र	मेष	11:0:54	अश्विनी / 4	शनी	मकर	1:21:46R	उत्तराषाढा / 2
सूर्य	वृषभ	7:32:31	कृत्तिका / 4	राहु	मकर	17:14:7	श्रवण / 3
बुध	मेष	15:21:24	भरनी / 1	केतु	कर्क	17:14:7	आश्लेषा / 1
शुक्र	मीन	27:16:12	रेवती / 4	गुलिक	वृश्चिक	17:1:33	ज्येष्ठा / 1
मंगल	कुंभ	29:53:44	पूर्वाभाद्रपदा / 3				

#### उपग्रह

हर ग्रह की स्तिथिनुसार उपग्रह की भी गणना की जाती है। सूर्य के रेखांश पर आधारित - चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपग्रह इस प्रकार है।

#### धुमादी योग के उपग्रह

ग्रह	उपग्रह	गणना प्रणाली
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 अंश. 20 मिनिट (कला).
राहु	व्यतिपात	360 - धूम
चंद्र	परिवेश	180 + व्यतिपात
शुक्र	इन्द्रचाप	360 - परिवेश
केतु	उपकेतु	इन्द्रचाप + 16 अंश. 40 मिनिट (कला).

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपग्रहों का तथा मंगल के अन्य उपग्रहों की काल गणना दिवस - रात्रि को समभाग में विभाजित करके की जाती है।

प्रथम भाग दिन के स्वामी को समर्पित है, तत्पश्च्यात अन्य स्वामी साप्ताहिक क्रमानुसार होते है। आठवे भाग का कोई स्वामी नहीं होता।जन्म रात्रि के समय हुआ हो तो, आठ समभागो में विभाजीत पहले सात भागों को ग्रहों का स्वामित्व दिया जाता है। यह सप्ताह के पाँचवे दिन से गिना जाता है।

रेखांश की गणना के लिये दो पद्धतियों का उपयाग किया गया है।प्रथम पद्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (ग्रहों के स्वामी) ग्रहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पद्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण ग्रहाधीपती के आधिन रहता है।

गुलीक काल गणनानुसार शनी के उपग्रह की स्तिथि अनुसार एक तीसरी पद्धित का भी अनुसंधान किया गया है, जिससे धुमादी योग के उपग्रहों के रेखांश की गणना की जाती है। यह नीचे दिये गये उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार से प्राप्त गुणफल को 'एस्ट्रो विज़न' कुंडली में 'मांडी' कहा गया है और जन्मपत्रिका मे मुख्य ग्रह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26	घटि 10 घटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
बुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

# गुलिकादी का समूह। स्वीकृत प्रणाली: लग्न के प्रारंभकाल

ग्रह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
सूर्य	काल	20:33:26	21:49:49
बुध	अर्धप्रहर	0:22:34	1:38:56
मंगल	मृत्यु	23:6:11	0:22:34
गुरु	यमघंट	1:38:56	2:55:19
शनी	गुलिक	19:17:4	20:33:26

## रेखांश उपग्रह

उपग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
काल	234:45:6	वृश्चिक	24:45:6	ज्येष्ठा	3
अर्धप्रहर	293:41:3	मकर	23:41:3	धनिष्टा	1
मृत्यु	271:22:38	मकर	1:22:38	उत्तराषाढा	2
यमघंट	319:31:44	कुंभ	19:31:44	शततारका	4
गुलिक	218:20:51	वृश्चिक	8:20:51	अनुराधा	2
परिवेश	9:7:29	मेष	9:7:29	अश्विनी	3
इन्द्रचाप	350:52:31	मीन	20:52:31	रेवती	2
व्यतिपात	189:7:29	तुला	9:7:29	स्वाती	1
उपकेतु	7:32:31	मेष	7:32:31	अश्विनी	3
धूम	170:52:31	कन्या	20:52:31	हस्त	4

## उपग्रहों के नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी-सहपती / नक्षत्राधी-अनुसहपती के कोष्टक

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	ज्येष्ठा	बुध	राहु	शनी
अर्धप्रहर	धनिष्टा	मंगल	मंगल	शनी
मृत्यु	उत्तराषाढा	सूर्य	गुरु	गुरु
यमघंट	शततारका	राहु	मंगल	शनी
गुलिक	अनुराधा	शनी	शुक्र	शुक्र
परिवेश	अश्विनी	केतु	गुरु	राहु
इन्द्रचाप	रेवती	बुध	शुक्र	शनी
व्यतिपात	स्वाती	राहु	गुरु	शनी
उपकेतु	अश्विनी	केतु	राहु	मंगल
धूम	हस्त	चंद्र	शुक्र	सूर्य

षा	ढस	वग	ित	Пल	का

स											
8: 1 2: 1 12: 11 3 10: 10: 4: 8: होरा  होरा   5	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
होरा  5	राशी										
5       5       4:       4:       4:       4:       5       5       5       5       5       5       5       5       5       5       5       5       8:       12:       विद्यापार       10:       2:       8:       12:       व्यापार       10:       2:       8:       12:       व्यापार       10:       2:       5       व्यापार       12:       5       7       4:       8:       2:       5       7       4:       8:       2:       5       7       4:       8:       2:       5       7       4:       8:       2:       5       7       4:       8:       2:       5       7       4:       8:       2:       5       7       4:       8:       2:       5       7       4:       8:       2:       5       9       9       9       9       10:       9       10:       4:       10:       2:       8:       4:       10:       10:       10:       2:       8:       9       10:       1       10:       10:       2:       8:       9       10:       5       5       5       5       5       5       5       5       5       5	8:	1	2:	1	12:	11	3	10:	10:	4:	8:
हेफ्कान 4: 5 2: 5 8: 7 7 10: 2: 8: 12: जतुर्थाश 5 4: 5 7 9 8: 9 10: 4: 10: 2: सप्तांश 8: 3 9 4: 12: 5 7 4: 8: 2: 5 नवांश 12: 4: 12: 5 12: 3 12: 10: 3 9 9 9 विशास  1 4: 12: 6: 5 8: 8: 6: 11 5 9 व्यादशांश 6: 5 5 7 10: 10: 9 10: 4: 10: 2: स्पेडलांश 7 6: 9 9 9 11 8: 6: 1 10: 10: 2: स्पेडलांश 1 1 1 10: 5 1 4: 4: 11 12: 8: जतुर्विशांश 1 1 1 10: 5 1 4: 4: 11 12: 8: 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5	होरा										
4:       5       2:       5       8:       7       7       10:       2:       8:       12:         चतुर्थीश       5       4:       5       7       9       8:       9       10:       4:       10:       2:         सप्ताश       8:       3       9       4:       12:       5       7       4:       8:       2:       5         नवांश       12:       4:       12:       5       12:       3       12:       10:       3       9       9         वरांश       1       4:       12:       6:       5       8:       8:       6:       11       5       9         ब्दांदशांश       7       6:       9       9       11       8:       6:       1       10:       10:       2:         विशान्य       1       10:       1       12:       12:       8:         चतुर्विशांश       1       10:       1       10:       10:       10:       2:         विशान्य       1       10:       5       1       4:       4:       1       12:       12:       8:         चतुर्विशान       1       10:       5 <td>5</td> <td>5</td> <td>4:</td> <td>4:</td> <td>5</td> <td>4:</td> <td>4:</td> <td>4:</td> <td>5</td> <td>5</td> <td>5</td>	5	5	4:	4:	5	4:	4:	4:	5	5	5
चतुर्थाश  5	द्रेष्क्रान										
5       4:       5       7       9       8:       9       10:       4:       10:       2:         सप्तांश       8:       3       9       4:       12:       5       7       4:       8:       2:       5         नवांश       12:       4:       12:       5       12:       3       12:       10:       3       9       9         व्याद्यकांश         6:       5       5       8:       8:       6:       11       5       9         विशास्य         7       6:       9       9       11       8:       6:       1       10:       10:       2:         सोडशांध         7       6:       9       9       11       4:       4:       1       12:       12:       8:         न्त्रांधांधा         8:       2:       11       11       4:       4:       1       12:       12:       8:         न्त्रांधांधा         10:       10:       10:       2:       10:       9       10:       5       7 <t< td=""><td>4:</td><td>5</td><td>2:</td><td>5</td><td>8:</td><td>7</td><td>7</td><td>10:</td><td>2:</td><td>8:</td><td>12:</td></t<>	4:	5	2:	5	8:	7	7	10:	2:	8:	12:
सप्तांश   8:   3   9   4:   12:   5   7   4:   8:   2:   5   5   7   4:   8:   2:   5   7   7   7   7   7   7   7   7   7	चतुर्थांश										
8:       3       9       4:       12:       5       7       4:       8:       2:       5         नवांश       12:       4:       12:       5       12:       3       12:       10:       3       9       9         दशांश       1       4:       12:       6:       5       8:       8:       6:       11       5       9         व्यादशांश       7       6:       9       9       11       8:       6:       1       10:       10:       2:         विशान्य       3       8:       2:       11       11       4:       4:       1       12:       12:       8:         चतुर्विशांश       1       1       10:       5       1       4:       6:       5       5       5       5       5         भम्श       10:       10:       2:       10:       9       10:       5       7       1       1         विशान्य       10:       10:       2:       10:       9       10:       5       7       1       1         विशान्य       10:       10:       2:       10:       9       10:       5       7 <td>5</td> <td>4:</td> <td>5</td> <td>7</td> <td>9</td> <td>8:</td> <td>9</td> <td>10:</td> <td>4:</td> <td>10:</td> <td>2:</td>	5	4:	5	7	9	8:	9	10:	4:	10:	2:
नवांश  12: 4: 12: 5 12: 3 12: 10: 3 9 9  दशांश  1 4: 12: 6: 5 8: 8: 6: 11 5 9  व्यादशांश  6: 5 5 7 10: 10: 9 10: 4: 10: 2:  सोडशांश  7 6: 9 9 11 8: 6: 1 10: 10: 2: विशान्प  3 8: 2: 11 11 11 4: 4: 1 12: 12: 8:  चतुर्विशांश  1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5 5  सम्श  10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1  तेशंशंश  8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: 12: खेंदेपंश  7 3 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	सप्तांश										
12: 4: 12: 5 12: 3 12: 10: 3 9 9  दशांश  1 4: 12: 6: 5 8: 8: 6: 11 5 9  व्दादशांश  6: 5 5 7 10: 10: 9 10: 4: 10: 2: सोडशांश  7 6: 9 9 11 8: 6: 1 10: 10: 2: विशान्ष  3 8: 2: 11 11 4: 4: 1 12: 12: 8: चतुर्विशांश  1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5 5  भम्श  10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1  विशांश  8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: खवेदांश  7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	8:	3	9	4:	12:	5	7	4:	8:	2:	5
दशांश  1	नवांश										
1 4: 12: 6: 5 8: 8: 6: 11 5 9  व्यादशांश 6: 5 5 7 10: 10: 9 10: 4: 10: 2: सोडशांश 7 6: 9 9 11 8: 6: 1 10: 10: 2: विशान्प 3 8: 2: 11 11 4: 4: 1 12: 12: 8: चतुर्विशांश 1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5  भमश 10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1  विशांश 8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: खनेदांश 7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	12:	4:	12:	5	12:	3	12:	10:	3	9	9
व्यादशांश 6: 5 5 7 10: 10: 9 10: 4: 10: 2: सोडशांश 7 6: 9 9 9 11 8: 6: 1 10: 10: 2: विशान्प 3 8: 2: 11 11 4: 4: 1 12: 12: 8: चतुर्विशांश 1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5 5 भम्श 10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1 विशांश 8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: खवेदांश 7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	दशांश										
6: 5 5 7 10: 10: 9 10: 4: 10: 2: सोडशांश 7 6: 9 9 11 8: 6: 1 10: 10: 2: विशान्प 3 8: 2: 11 11 4: 4: 1 12: 12: 8: चतुर्विशांश 1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5 5 5	1	4:	12:	6:	5	8:	8:	6:	11	5	9
सोडशांश 7 6: 9 9 9 11 8: 6: 1 10: 10: 2: विशान्ष 3 8: 2: 11 11 4: 4: 1 12: 12: 8: चतुर्विशांश 1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5  भमश 10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1  विशांश 8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: 12:  खवेदांश 7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	व्दादशांश										
7       6:       9       9       11       8:       6:       1       10:       10:       2:         विशान्प       3       8:       2:       11       11       4:       4:       1       12:       12:       8:         चतुर्विशांश         10:       5       1       4:       6:       5       5       5       5       5         भमश         10:       10:       10:       2:       10:       9       10:       5       7       1       1         त्रिशांश         8:       9       6:       9       8:       7       9       2:       12:       12:       12:         खनेदांश         7       4:       11       8:       5       5       5	6:	5	5	7	10:	10:	9	10:	4:	10:	2:
विशान्ष  3 8: 2: 11 11 4: 4: 1 12: 12: 8:  चतुर्विशांश  1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5 5  भम्श  10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1  तिशांश  8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: 12:  खवेदांश  7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	सोडशांश										
3       8:       2:       11       11       4:       4:       1       12:       12:       8:         चतुर्विशांश         1       1       10:       5       1       4:       6:       5       5       5       5       5         भम्श       10:       10:       10:       9       10:       5       7       1       1         त्रिंशांश       8:       9       6:       9       8:       7       9       2:       12:       12:       12:         खवेदांश       7       3       5       9       7       4:       11       8:       5       5       5       5	7	6:	9	9	11	8:	6:	1	10:	10:	2:
चतुर्विशांश  1	विशान्ष										
1 1 10: 5 1 4: 6: 5 5 5 5 5 भम्श 10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1 1 त्रिंशांश 8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: 12: खवेदांश 7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	3	8:	2:	11	11	4:	4:	1	12:	12:	8:
भम्श  10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1  त्रिंशांश  8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: खवेदांश  7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	चतुर्विशांश	T									
10: 10: 10: 2: 10: 9 10: 5 7 1 1 1	1	1	10:	5	1	4:	6:	5	5	5	5
त्रिंशांश  8: 9 6: 9 8: 7 9 2: 12: 12: 12: खवेदांश  7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	भम्श										
8:     9     6:     9     8:     7     9     2:     12:     12:     12:       खवेदांश       7     3     5     9     7     4:     11     8:     5     5     5		10:	10:	2:	10:	9	10:	5	7	1	1
खवेदांश 7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5	त्रिंशांश										
7 3 5 9 7 4: 11 8: 5 5 5		9	6:	9	8:	7	9	2:	12:	12:	12:
9 5 4: 12: 1 1 10: 3 2: 2: 6:	7	3	5	9	7	4:	11	8:	5	5	5
9 5 4: 12: 1 1 10: 3 2: 2: 6:											
	9	5	4:	12:	1	1	10:	3	2:	2:	6:

शष्टियांश										
2:	11	5	7	6:	10:	1	12:	8:	2:	6:
ओजराशी गणना										
8	10	6	11	8	7	8	5	6	6	7

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या 7-तुला 8-वृश्चिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंभ 12-मीन वर्गोत्तम शुक्र शनी वर्गोत्तम में है।

## अष्टकवर्ग

चं	र	बु	शु	मं	गु	श	शुभाशुभ
मेष							
5	3	6	6	3	4	3	30
वृषभ							
3	2	4	3	2	6	3	23
मिथुन							
6	3	3	5	2	3	4	26
कर्क							
4	1	3	4	2	5	1	20
सिंह							
2	6	4	3	5	7	3	30
कन्या							
4	6	6	3	6	4	3	32
तुला							
4	4	4	4	3	1	1	21
वृश्चिक							
5	4	6	4	4	4	6	33
धनु							
4	3	3	6	1	8	3	28
मकर							
5	5	6	4	3	4	4	31
कुंभ							
3	8	5	4	5	5	5	35
मीन							
4	3	4	6	3	5	3	28
49	48	54	52	39	56	39	337

## षडबल संक्षिप्त सारिणी

चं	र	बु	शु	मं	गु	श					
संपूर्ण षड्बल											
541.18	563.09	396.76	419.12	475.25	442.54	418.69					
संपूर्ण शडबल											
9.02	9.38	6.61	6.99	7.92	7.38	6.98					
मौलीक आवश्यक	न्ता										
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00					
षडबल अनुपात											
1.50	1.88	0.94	1.27	1.58	1.14	1.40					
संबन्धी स्थान											
3	1	7	5	2	6	4					

## इष्टफल, कष्टफल कोष्टक

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल						
21.58	50.62	19.43	44.65	37.62	27.62	39.22
कष्टफल						
19.36	9.38	33.63	1.55	18.25	16.50	20.42

				$\overline{}$	
भ	विबल	1 का	ा त	$\prod C$	का

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधीप	ती का बल										
475.25	418.69	418.69	442.54	475.25	419.12	419.12	541.18	563.09	396.76	419.12	475.25
भाव दिग्ब	<b>ग</b> ल										
0	20.00	40.00	60.00	10.00	20.00	30.00	20.00	50.00	30.00	40.00	10.00
भावद्रष्टीब	<b>ा</b> ल										
-18.71	30.77	26.93	30.33	-6.22	-11.02	-11.78	-36.96	-36.42	16.40	-9.54	-2.94
संपूर्ण भा	वबल										
456.54	469.46	485.62	532.87	479.03	428.10	437.34	524.22	576.67	443.16	449.58	482.31
भावबल व	के रुप										
7.61	7.82	8.09	8.88	7.98	7.14	7.29	8.74	9.61	7.39	7.49	8.04
संबन्धी स	थान										
8	7	4	2	6	12	11	3	1	10	9	5

#### ClickAstro In-Depth Horoscope

With best wishes: Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[In-Depth Horoscope - 14.0.0.2]

#### Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.